आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" दिसम्बर 2021

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 44
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –22 । अंक–12 । अगहन (मार्गशीर्ष) / पौष मास । दिसम्बर 2021

सारांश 2021

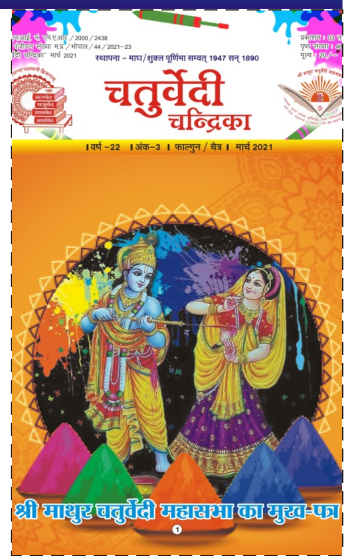

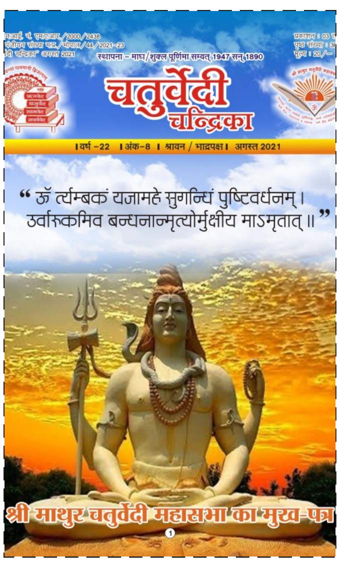

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुख-पत्र

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.
Bharat Petroleum

आपके 'अधिकार' और आपका 'प्यार' यही हमारी गरिमा, यही पहचान!

२४ दिसंबर २०२१
राष्ट्रिय उपभोक्ता दिवस।

४० वर्षों से चल रही निरंतर सेवा में, हमने सर्वोपरि रखा आपके अधिकारों को, ख़ुशी और समाधान को। बदले में मिले आपके असीमित प्यार और भरोसे से बनी है यह 'रेखा'। 'राष्ट्रिय उपभोक्ता दिवस' के मौके पर हम गर्व से कहते है, आप ही हमारी शान, और आप ही अभिमान।

रेखा गॅस एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095, 2221195, 2225195, 2228495.
E-mail : rekhagas20032003@rediffmail.com

www.malhar.org
(र.क्र. 2021/763)

पुण्यस्मरण

15 वीं पुण्यतिथि

जन्मतिथि
9.06.1941

निर्वाण
24.12.2006

स्वर्गीय श्री सत्यदेव चतुर्वेदी

(अनूपशहर / कोलकाता)

सुपुत्र स्व. श्री लाड़ली प्रसाद एवं स्व. श्रीमती कैला देवी चतुर्वेदी

श्रद्धावनत

पत्नी	:-	श्रीमती करुणा चतुर्वेदी
पुत्र-पुत्रवधु	:-	आलोक - श्रीमती सीमा चतुर्वेदी
नाती	:-	देवांश
पुत्री - दामाद	:-	श्रीमती अनुपमा - डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
धेवता/धेवती	:-	अपूर्व , श्रेया
		एवम समस्त परिवार

निवास :- श्री आलोक चतुर्वेदी, A-7/6 मार्शेलिन को. हाउस. सोसायटी
ई.के.टी.पी. फेस-2 ई.एम बाई पास, कोलकाता (प.बंगाल) -700107
मोबाइल न. - 9836408000

(र.क्र. 2021/760)

शांति प्रमोद समर्थ एवं योग्यता छात्रवृत्ति निधि

मेरे पूज्य माता पिता **स्व. प्रमोद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती शांति चतुर्वेदी** की स्मृति में चतुर्वेदी छात्र छात्राओं हेतु आर्थिक सामर्थ योग्यता आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना है। पूज्य स्व. श्री प्रमोद चतुर्वेदी ने अपने जीवन काल में अनेक छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया था।

इस योजना में योग्य जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग/मेडिकल शिक्षा के लिए प्रवेश लेने पर यह सहायता/छात्रवृत्ति देने की योजना है। इस हेतु दो स्नातक इंजीनियरिंग/मेडिकल छात्र छात्राओं को प्रथम वर्ष की ट्यूशन फीस का 50 प्रतिशत जिसकी अधिकतम सीमा 50,000 रूपये तक प्रति छात्र को दी जा सकेगी।

योग्यता मापदंड ::- वे छात्र छात्रा जो निम्न योग्यता मापदंड को पूरा करेंगे आवेदन कर सकते हैं:

1. जिनके अभिभावक की वार्षिक आय 5,00,000/- रुपये से अधिक न हो।
2. वे छात्र छात्रा जो इंजीनियरिंग/मेडिकल स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले रहे हैं।
3. जिन छात्रों ने 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए हैं।
4. वे छात्र/छात्रा जिन्हें किसी अन्य माध्यम यथा केंद्रीय/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। वह इस योजना के पात्र नहीं होंगे।

इच्छुक छात्र/छात्रा मेल आई. डी. - smisra1958@gmail.com
पर आवेदन कर सकते हैं।

श्री संजय मिश्र

फ्लैट न. 2001 क्रीप्टोन टॉवर, न्यू प्रभादेवी रोड,
प्रभादेवी, मुंबई (महाराष्ट्र) - 400025
मोब. - 9810607145, 9987787145
मेल आईडी.- smisra1958@gmail-com

(र.क्र. 2021/762)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	6
संपादकीय	7
महासभा कार्यकारिणी	8
संपादक के नाम पत्र	9
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा	10
निवेदन	15
वेद माता गायत्री	16
सांस फूलने का आयुर्वेदिक उपचार....	17
मैनपुरी में होली गायन	19
महाशिवरात्रि	21
बाल सुरक्षा	23
मनोबल ही समाधान	25
एक कर्त्तव्य -'अंतिम संस्कार '	27
अंतिम संस्कार में ध्यान रखने वाली बातें	31
विश्व हिन्दी सचिवालय	32
भारत के महान संत श्रृंखला - श्री रामालिंगम स्वामी	33
यज्ञोपवीत संस्कार	34
शाखा समाचार	37
समाज समाचार	40
शोक समाचार	40

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अंक 12
दिसम्बर, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर सादर पालागन,

देव उठनी एकादशी के साथ ही हमारे समाज के साथ-साथ समस्त सनातन हिन्दू धर्म में मांगलिक कार्यों की शुरुआत हो जाती है। पौष माह के प्रारंभ से इसमें आंशिक अवरोध होता है, जो कि 1 माह तक रहता है। कुलदेवी माँ महाविद्या देवी मंदिर में पानी की सुचारू व्यवस्था भाई राकेश जी, मथुरा के सहयोग से पूर्ण हुई। इसमें पानी की बोर कराने से लेकर समर्सिबल पंप के द्वारा मंदिर प्रांगण की टंकी तक पानी पहुंचाने का कार्य संपन्न हुआ। यह पुण्य भाई राकेश जी, मथुरा के मार्ग दर्शन में संपन्न हुआ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के शताब्दी वर्ष का इतिहास संपूर्णता पर है। अतः आपसे निवेदन है कि अपने बुजुर्गों की स्मृति में या अपने प्रतिष्ठानों के विज्ञापन देकर इस इतिहास के कार्य के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करें। सहयोग राशि हेतु विस्तृत जानकारी इस अंक में दी जा रही हैं।

वर्तमान वित्तीय वर्ष में अभी तक अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत 6,32,100/- रुपए की राशि लाभार्थियों को तीन त्रैमासिक किस्तों में हस्तांतरित की जा चुकी है। इस योजना में अभी तक आप सभी के सहयोग से 5,57,076/- एकत्र हो चुके है। अन्नपूर्णा की अगली किस्त जनवरी के प्रथम सप्ताह में भेजी जाएगी। अन्नपूर्णा योजना में सहयोग हेतु आशा जी (दिल्ली) - 48,000/- व कुमुद जी (अजमेर) - 50,000 व अन्य सभी दानदाताओं का बहुत-बहुत आभार। जिसके लिए आप सभी से सहयोग की अपेक्षा।

अपील

महोदय,

हर्ष का विषय है कि चतुर्वेदी महासभा ने अपनी यात्रा के सौ वर्ष पूर्ण कर लिए है।इस वर्ष महासभा अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रही है।कोरोना महामारी के कारण सभा वृहद समारोह तो आयोजित नही कर सकी है,लेकिन अपने शताब्दी वर्ष मे महासभा द्वारा वर्चुअली नियमित कार्यक्रम किये जा रहे है।इसी सन्दर्भ मे कार्यसमिति ने शताब्दी वर्ष को अक्षुण बनाने हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है।स्मारिका मे सभा की स्थापना से लेकर अबतक की यात्रा का पूरे लेखाजोखा के साथ ऐतिहासिक एवं कीर्ति परख आलेख भी समाहित किए जायेगे।

अतःआपसे निवेदन है कि स्मारिका मे निम्न दर पर श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के नाम चैक द्वारा भुगतान कर अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देने की कृपा करे। खाता विवरण

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा बचत खाता न.1006238340 आई एफ एस कोड- CBIN0283533 सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ब्रांच- आनंद विहार,दिल्ली

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-
द्वितीय एवं तृतीय कवर	20000/-
रंगीन फुल पृष्ठ	11000/-
श्वेत श्याम फुल पेज	8000/-
श्वेत श्याम हाफ पेज	5000/-
श्वेत श्याम चौथाई पेज	3000/-
शुभकामना चार लाइन	1100/-

संपर्क

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी(सभापति) 9873395001
भरत चतुर्वेदी (संयोजक) 7059086775
मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी(मंत्री) 09871170559
शशांक चतुर्वेदी (संपादक) 09826086879

संपादकीय

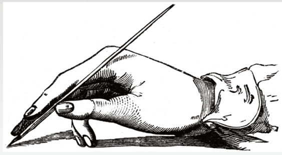

प्रकृति का यह नियम है, कि हर शुरुआत का अंत होता है,और हर उदय का अवसान होता है। अच्छे बुरे खट्टे मीठे अनुभवों के साथ वर्ष 2021 अपने अंतिम पड़ाव पर खड़ा है।

हर आरंभ का अंत सुनिश्चित है,
हर अंत एक नई शुरुआत है।
जब रात ढले तो आए उजाला,
साँझ ढले तो अंधेरी रात है ।।

ईश्वर के बनाए इस चक्र को इंसान समझ नहीं पाया है, कि पतझड़ के बाद बसंत क्यों और जेठ के बाद बरसात क्यों आती है। ईश्वर की बनाई इस प्रकृति कि हम सब अधीन हैं। और इसी के अनुसार हमें अपना जीवन यापन और भरण पोषण करना है।

इस अंक में हम आप सभी की सहमति से एक नया प्रयोग करने जा रहे हैं आशा है आपको पसंद आएगा। वर्ष 2021 के उत्कृष्ट लेखों के भंडार से हर माह के एक या दो उत्कृष्ट लेखों का संग्रहण कर एक सारांश 2021 बनाया है। जगह की उपलब्धता की सीमा की बाध्यता के साथ हमने कुछ नया करने का प्रयास किया है। जिसके अंतर्गत जनवरी 2021 से नवंबर 2021 तक की पत्रिकाओं के कुछ लेखों को इसमें समाहित किया है। 2021 में होली विशेषांक, कोरोना उपचार पर स्वास्थ्य विशेष अंक व कविता विशेषांक उत्कृष्ट बन पड़े थे। आप सभी का स्नेह व प्यार ही मेरी पूंजी है। सम्पूर्ण समाज के साथ सभी समाज हितैषी लेखकों का बहुत बहुत आभार। आपका स्नेह पाने के लिए मैं आगे भी निरंतर प्रयास करता रहूँगा।

महासभा का शताब्दी वर्ष का इतिहास भाई भरत जी के संयोजन में अपने अंतिम पड़ाव पर है। इसके प्रकाशन में आपसे सहयोग की अपेक्षा है। 100 वर्षों का इतिहास का संयोजन अपने आप में एक महान उपलब्धि है।

महासभा के शताब्दी वर्ष पर यथाशीघ्र पत्रिका का झरोखा विशेषांक निकालने की हमारी योजना है।जिसमे हम पत्रिका में अब तक प्रकाशित हुए सामाजिक चिन्तन परख उत्कृष्ट आलेखों को पुनः प्रकाशित करना चाहते है। अतःआपसे निवेदन है कि पूर्व में प्रकाशित ऐसे आलेख हमें यथाशीघ्र भेजने की कृपा करे।

महासभा की कार्यकारिणी की बैठक विगत 31 अक्टूबर 2021 को संपन्न हुई। इसमें अनेक बांधवों ने समाज हित की चर्चा कर समाज की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए। कोरोना काल के इस आपात कालीन समय में भी ऑनलाइन बैठक अपने आप में एक उपलब्धि है। यह आपदा में अवसर के समान हैं। इसके लिए सभापति प्रदीप जी व मंत्री मुनींद्र जी व समस्त कार्यकारिणी को साधुवाद।

आशा है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रिया की हमें सदैव की भांति प्रतीक्षा होगी। आपकी प्रतिक्रिया हमारा पथप्रदर्शन करती है।

सादर
शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका – श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर – शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

संपादक के नाम पत्र

चतुर्वेदी चंद्रिका की पीडीएफ फाइल प्राप्त हुई। चंद्रिका का एक-एक अंश पड़ा वास्तव में चंद्रिका के बारे में तारीफ करना सूरज को दीपक दिखाना है। अध्यक्ष जी का सभापति की कलम से लिखा गया उद्बोधन, संपादकीय भाई शशांक जी द्वारा जो लिखी गई है, आनंद आ गया। इससे यह प्रतीत होता है कि हमारे संपादक महोदय कितनी लगन और परिश्रम से चतुर्वेदी चंद्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं। चंद्रिका का मैटर अनुकरणीय है। भाई शशांक जी को पुनः धन्यवाद देता हूँ। उनके अथक प्रयासों के लिए चंद्रिका के प्रति उनकी सेवाओं के लिए इतना जरूर कहना चाहूंगा कि आज जितनी प्रॉमिनेंट सर्विस कभी प्राप्त नहीं हुई। जितनी की इस कार्यकाल में हो रही है। चंद्रिका के प्रकाशक, संपादक बधाई के पात्र हैं। पुनः आभार व्यक्त करता हूं।

– **विपिन चतुर्वेदी,** लखनऊ

प्रिय शंशाक,पालागन। दीपावली अंक का सुंदर है। मुखपृष्ठ देख कर मन आनंदित हो गया। यज्ञोपवीत संस्कार, महाविद्या एवं चर्चिका देवी पर आलेख जानकारीपूर्ण हैं। स्वास्थ्य वर्धक काढ़ा जैसी उपयोगी जानकारी के साथ ही चौबे जी की रसोई को नियमित स्तंभ बनाओ। भगवत कृपा से चतुर्वेदी समाज विद्या, बुद्धि, सम्पन्नता में किसी से कम नहीं है। इसमें दो मत नहीं है। मैं समाज को एक भयंकर सत्य से जागरूक कराना चाहता हूँ। इटावा से जैतपुर, बाह, शिकोहाबाद आदि क्षेत्रों में 'जॉन्स मिशन' नामक संस्था के कई मिशनरी स्कूल खुल चुके हैं और इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। हमारी विशिष्टिता सौंदर्य धीरे धीरे लुप्त होता जायेगा। इस सौंदर्य को बनाए रखने की हम सब मिलकर कोशिश करनी चाहिये। मेरा आग्रह है कि विद्या भारती के सरस्वती शिशु मंदिर अपने अपने गांव में स्थापित करने की चेष्टा करें तो इस भदावर में समाज की बहुत बड़ी सेवा होगी। मेरा विश्वास है कि समाज में सभी बाँधव इस सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्या की गंभीरता को समझ कर हल करने का प्रयास करेंगे। –**त्रिलोकी नाथ** (होलीपुरा/कोलकाता)

पालागन भाई साहब,आज चतुर्वेदी चंद्रिका का माह नवम्बर प्राप्त हुई।गागर में सागर की अनुभूति हुई। देवी महाविद्या और मां चर्चिका पर जो जानकारी मिली वो अभूतपूर्व थी। लेखक के साथ ही आप को भी साधुवाद, आपने इसे पत्रिका में स्थान दिया।गुर सहदेव जी का यज्ञोपवीत संस्कार पर आलेख आकर्षक है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत किया मानसून और स्वास्थ्य ने। बुढ़ापे को आसान बना दिया राजेश्वर जी ने। कुल मिलाकर कर कह सकता हूं कि चतुर्वेदी चंद्रिका नित अपने नये आयाम स्थापित कर रही है।

– **सौरभ चतुर्वेदी,** लखनऊ

आग्रह

महासभा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर महासभा की स्थापना एवं 100 वर्षीय यात्रा के इतिहास लेखन व संयोजन का कार्य अपने अंतिम चरण में हैं। शीघ्र ही इसे प्रकाशित किया जायेगा। हमारा प्रयास है कि इसमें अभी तक के सभी सभापतियों, मंत्रियों व संपादकों का सचित्र संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाय, परंतु अपूर्ण जानकारी व जानकारी के अभाव में हमारे सतत प्रयासों के बाबजूद अब तक समस्त जानकारी एकत्रित नही हो सकी है।

सन 1925 में चतुर्थ अधिवेशन के सभापति पं0 प्यारेलाल जी मिश्र 1926 में पंचम अधिवेशन के सभापति सूबा साहब मुन्नालाल मिश्र जी, सन 1927 में षष्ठम अधिवेशन के सभापति डिप्टी साहब राधेलाल जी, सन 1929 में सप्तम अधिवेशन के सभापति महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा जी सन1930 मे अष्टम अधिवेशन के सभापति हास्यरसावतार जगन्नाथ प्रसाद जी सन् 1932 में नवम अधिवेशन के सभापति सूबा साहब मुन्नालाल जी मिश्र सन 1933 में दशम अधिवेशन के सभापति पं0 विश्वेश्वर दयाल जी विशारद, सन 1936 में द्वादश अधिवेशन के सभापति पं0 सालिगराम जी पाठक, सन 1938 में त्रयोदश अधिवेशन के सभापति राय साहब लक्ष्मीनारायण जी, सन 1941 में चतुर्दश अधिवेशन के सभापति पं0 श्रीनारायण जी एवं सन 1945 व 1948 में सोलहवे व सत्रहवे अधिवेशन के सभापति पं0 जगदीश प्रसाद जी के सहयोगी मंत्रियों के नाम उपलब्ध नही है। साथ ही महासभा के मुखपत्र के संपादकों में पं. महावीर प्रसाद जी एवं पं. महेश चन्द्र जी का ब्यौरा उपलब्ध नहीं हो सका है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इसे पूर्ण करवाने के पुण्य कार्य में सहयोग करें। हमारा उद्देश्य बुजुर्गों के परिश्रम से नई पीढ़ी को अवगत कराना व उनके परिश्रम को समाज के सामने पहचान देना है। इसके साथ ही यदि महासभा से सम्बन्धित कोई भी ऐतिहासिक जानकारी हो वह भी हमें भेजने की कृपा करेगे। सभी से विनम्र निवेदन है कि समाज के व्यावसायिक प्रतिष्ठान एवं अपने पूर्वजो की स्मृति मे विज्ञापन देकर समाजहित मे अपना अमूल्य योगदान देने की भी कृपा करे। आपके त्वरित सहयोग के आकांक्षी

* भरत चतुर्वेदी,'अचल', रिषड़ा, +91 70590 86775

** शशांक चतुर्वेदी,भोपाल, 9826086879

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी बैठक

दिनाँक - 31 अक्टूबर 2021

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की ऑनलाइन बैठक दिनाँक 31 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण दशमी के लाभ चौघड़िया में लौह पुरुष व भारत के यशस्वी पूर्व गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के शुभ अवसर पर प्रातः 10:30 आहूत की गई। सभापति डॉ प्रदीप जी की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ करते हुए मंत्री मुनींद्रनाथ जी ने सर्वप्रथम ज्ञानेंद्र जी (गाजियाबाद) को मंगलाचरण पाठ हेतु आमंत्रित किया। ज्ञानेंद्र जी ने लयबद्ध मंत्रोचारण से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। तत्पश्चात मंत्री मुनींद्र नाथ जी द्वारा चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित विगत बैठक की कार्यवाही को सदन के पटल पर रखा। जिसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया।

सभापति डॉ. प्रदीप जी ने अपनी समाजोन्मुखी योजना, गुल्लक योजना के बारे में बताया कि हम इस योजना में विगत कुछ दिनों से कार्य कर रहे हैं। जिसमें हमारे निवेदन पर 35,364/- रुपये एकत्र हो गए हैं। जिसमें मेरे साथ मेरी टीम के साथियों ने पूर्ण सहयोग दिया है। आप सभी से अनुरोध है कि आप सभी अपनी अपनी गुल्लक खोल कर जमा धनराशि महासभा के खाते में हस्तांतरित करने की कृपा करें। जिससे समाज हित की योजनाओं को सुचारू रूप से संचालित किया जा सके। कार्यकारिणी के शेष सहयोगियों से भी मेरा अनुरोध है कि अपना व समाज के अन्य बांधवों की सहयोग राशि यथा शीघ्र जमा कराने का कष्ट करें। अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्ष 2021-22 में अभी तक तीन मासिक किस्त (अप्रैल-जून, जुलाई-सिंतबर, अक्टूबर-दिसम्बर) दी जा चुकी है। जिसमें कुल 6,32,100/- रुपये की राशि दी गई है। इस वित्तीय वर्ष में अभी तक एक किस्त जाना शेष है। इस योजना में 24000/- रुपये वार्षिक प्रत्येक लाभार्थी को दिए जाते हैं। जो त्रैमासिक रूप में भेजे जाते हैं। अभी वर्तमान वित्तीय वर्ष 2021-22 में रुपये 5,52,076/- रुपये एकत्र किए गए है। इस पर संरक्षक कमलेश जी ने इस विषय में अपने विचार रखे। जिस पर सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि अन्नपूर्णा सहायता त्रैमासिक रूप से अग्रिम भुगतान (एडवांस) के रूप में दी जाती है।

बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए मंत्री मुनींद्र जी ने विगत वर्ष की आय व्यय का लेखा जोखा सदन के पटल पर रखा। जिसका प्रकाशन चतुर्वेदी पत्रिका में किया जायेगा है।

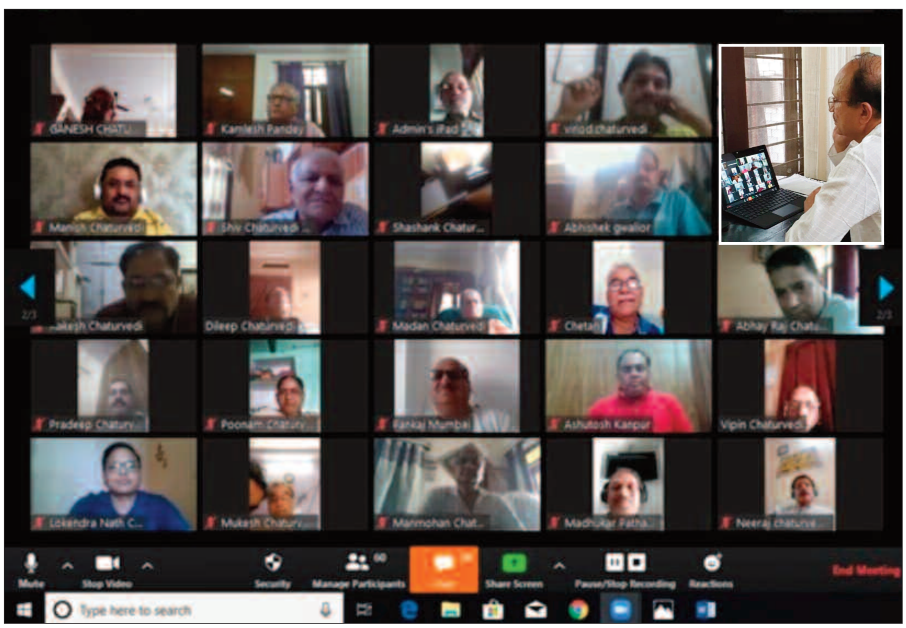

इसे सभी ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया। इस पर चर्चा में कमलेश जी संरक्षक (नोएडा), ललित जी (लखनऊ), मनोज जी (बेंगलुरु), ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) आदि ने भाग लिया।

तत्पश्चात जनगणना के बारे में ज्ञानेंद्र जी (गाजियाबाद) व शिव जी (कोटा) ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अभी तक 6,973 व्यक्तियों का डाटा आया है। समाज के लोग 127 गाँव व शहरों में निवास कर रहे हैं। सभापति प्रदीप जी ने जनगणना कार्य में तेजी लाने व शीघ्र कार्य पूर्ण करने की अपील की। इस विषय पर संजय जी (कानपुर), आशीष जी (आगरा), ललित जी (लखनऊ), भरत जी (रिशड़ा) ने चर्चा

में भाग लिया।

बैठक को कार्य सूची के अनुसार आगे बढ़ाते हुए मंत्री मुनींद्र जी ने औपचारिक बैठक के आयोजन के संबंध में बताया कि भुवनेश जी ने औपचारिक बैठक के आयोजन के लिए गोंदिया में बैठक के आयोजन का प्रस्ताव किया था। इस तरह की बैठक के आयोजन हेतु आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं। इस पर सभापति प्रदीप जी ने परिस्थितियों ठीक होने पर शीघ्र बैठकों की औपचारिक आयोजन पर अपनी सहमति दे दी। इस चर्चा में दिलीप जी (लखनऊ), प्रदीप जी,लालन (आगरा), ऊषा जी (भोपाल), आशुतोष जी (कानपुर), कौशल जी (दिल्ली), विपिन जी (लखनऊ) ने चर्चा में भाग लिया। अगली बैठक औपचारिक रूप से आयोजित करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

सभापति प्रदीप जी ने आगामी वर्ष के प्रस्तावित कैलेंडर के प्रकाशन का प्रस्ताव रखा। जिस पर भुवनेश जी (गोंदिया) में कैलेंडर में विज्ञापन हेतु स्थान दिए जाने का प्रस्ताव किया। उक्त विज्ञापन के साथ 1000 कैलेंडर अपनी ओर से प्रकाशित कर महासभा द्वारा सशुल्क वितरित किए जाने का सुझाव भी दिया। इस पर अखिलेश जी (लखनऊ), संजय जी (कानपुर), ललित जी (लखनऊ), दिलीप जी (लखनऊ), मधुकर जी (आगरा), प्रदीप जी,संजू (गाजियाबाद), अभयराज जी (गुड़गांव), ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने अपने विचार रखें।

तत्पश्चात भरत जी (रिषड़ा) ने महासभा के 100 वर्षों के इतिहास की लेखन कार्य की प्रगति पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि सभापति प्रदीप जी के मार्गदर्शन व संपादक शशांक जी व अन्य सामाजिक बंधुओं के सहयोग से यह कार्य अपनी पूर्णतः पर है। इस कार्य में कुछ पूर्ववर्ती बांधवों का विवरण उपलब्ध नहीं हो सका है। जिसकी सूचना दी जा रही है। इस कार्य में मैं आप सभी से सहयोग की अपेक्षा करता हूँ। हम विगत 100 वर्षों में महासभा के सभापतियों, मंत्रियों व संपादकों का सचित्र विवरण प्रकाशित करने का प्रयास कर रहे हैं। यथाशीघ्र खुशखबरी आपको दिए जाने का प्रयास है।

तत्पश्चात सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि हम महासभा के सीधे भुगतान की प्रक्रिया गेटवे व कॉल सेंटर की सुविधा समाज के अपेक्षित रुझान के अभाव में बंद कर रहे हैं। बैंकों में ऑनलाइन भुगतान की प्रक्रिया पूर्ववत ही रहेगी। सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि उषा जी के नेतृत्व में महिला प्रकोष्ठ व ज्ञानेंद्र जी के नेतृत्व में आई.टी. प्रकोष्ठ ने अच्छा कार्य किया है। आगे सभापति डॉ. प्रदीप जी ने बताया कि डॉ. राकेश जी, मथुरा के सहयोग से महाविद्या देवी मंदिर प्रांगण में बोरिंग करवाकर व समर्सिबल पंप, पाईप लाइन, टंकी द्वारा पानी की समुचित व्यवस्था की गई।

बैठक में महासभा संरक्षक कमलेश पांडे जी ने कहा कि कोरोना काल में ऑनलाइन बैठकों का आयोजन एक उपलब्धि है। अवसर में उपलब्धि यह है कि इस काल में महिलाओं के कार्यक्रम ज्यादा सफल रहे। इसके लिए उषा जी को बधाई। गुरुवाणी कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई। आई.टी. सेल अपने कार्यक्रमों के प्रचार पर आवश्यक रूप से ध्यान दें।

महासभा संरक्षक भरत जी ने कहा कि चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक शशांक जी को संपादन के एक वर्ष पूर्ण होने पर बधाई। आपके प्रयासों से पत्रिका में नित्य नए सुखद परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। आशा के अनुरूप वे अच्छा कार्य कर रहे हैं। उन्हें उनके अनुभव का लाभ मिल रहा है। कविता विशेषांक, स्वास्थ्य विशेष व होली का अंक सुंदर बन पड़े थे। सभापति प्रदीप जी जैसा सहयोगी व मार्गदर्शक मिलना भी उनका सौभाग्य है। सभी प्रकोष्ठ अच्छा कार्य कर रहे हैं। युवा प्रकोष्ठ से भी अच्छे कार्यक्रमों की अपेक्षा है। सदाबहार मंत्री मुनींद्र जी बखूबी सभा के संयोजन व आयोजन का कार्य कर रहे हैं। भाई भरत इतिहास के लेखन के पुनीत कार्य में अवश्य शीघ्र सफल होंगे।

बैठक के अंत में अपने अध्यक्षीय भाषण में सभापति प्रदीप जी ने कहा कि हमने आज अनेक विषयों पर क्रमवार चर्चा की जिसमें महिला प्रकोष्ठ के कार्यक्रम हरियाली तीज के सफल आयोजन पर बधाई। गुरुवाणी के सफल आयोजन पर बधाई। महासभा का इतिहास पूर्णतः पर है। आप सभी से सहयोग की अपेक्षा है। समाज के विदेशों में निवासित बंधुओं से जुड़ाव पर चर्चा चल रही है। शीघ्र ही इसके सुखद परिणाम होंगे। डॉ. मनीष जी,कोटा ने बताया कि शीघ्र ही युवा प्रकोष्ठ के अंतर्गत नृत्य व गायन एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन पर विचार चल रहा है। कैलेंडर के प्रकाशन में भुवनेश जी के सहयोग पर बहुत–बहुत आभार। कैलेंडर की आवश्यक संख्या की मुझे जानकारी दें। जिसके अनुरूप मात्रा में प्रकाशन करवाया जा सके। अन्नपूर्णा योजना, गुल्लक योजना में सहयोग हेतु आप सभी का बहुत–बहुत आभार।

मंत्री मुनीन्द्र जी ने बताया की दिसम्बर अंक में वर्ष 2020–21 के आय और व्यय का लेखा प्रकाशित किया जायेगा।

अंत में मंत्री मुनीन्द्र नाथ जी द्वारा बैठक में उपस्थित रहने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया गया। तत्पश्चात विगत कुछ समय में दिवंगत बांधवों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि देकर बैठक संपन्न हुई।

विवरण प्रस्तुति ::

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री,महासभा

शशांक चतुर्वेदी, संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका

SHRI MATHUR CHATURVEDI MAHASABHA

Registered unde: Society Registration Act, 1860 in Agra

Registration No. 409/1919-1920

Registration Renewal No. R/AGR/01948/2021-2022 dt 10/10/2020

BALANCE SHEET AS AT 31st MARCH 2021

LIABILITIES	Current Year		ASSETS	Current Year	
Membership (Mahasabha) Corpus Fund			***Fixed Deposits***		
(Life and Kul Kramagat)			Central Bank of India	35,78,392	
As per last Account	12,18,846		Accured Interest on FDR	77,297	
Add : Corpus Received during the year	18,851				36,55,689
		12,37,697	***Current Assets, Loan & Advances***		
Membership Satra Fund			Tax Deducted at Source	13,226	
As per Last Account	3,92,859		Income Tax Refund	25,153	
Add : Corpus Received during the year	202				38,379
		3,93,061	***Cash & Bank Balances***		
Other Kosh/ Funds			Cash In Hand	3,101	
(As per List)		4,72,800	Central Bank of India - Delhi	2,62,395	
					2,65,496
Prepayment - Annapurna		20,25,099	***Income & Expenditure Account (Dr. Balance)***		
(Annexure -III)			*(As per Detail in Annexure -II)*		1,69,093
Total		**41,28,657**	**Total**		**41,28,657**

For Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha

President Pradeep Chaturvedi

Seceretary Muninder Chaturvedi

Treasurer Mahesh Chand Chaturvedi

Place: New Delhi
Date: 19.10.2021

As per our separate report of even date attached.
For Shiv & Associates
Chartered Accountant
Firm Registration Number 009989N

CA Manish Gupta
(Partner)
Membership No. 095518

UDIN : 21095518AAAASJ4467

SHRI MATHUR CHATURVEDI MAHASABHA

Registered under Society Registration Act 1860 in Agra

Registration No. 409/1919-1920

Registration Renewal No. R/AGR/01948/2021-2022 dt 10/10/2020

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31st MARCH 2021

EXPENDITURE	Current Year		INCOME	Current Year	
To Expenses for Patrika			By Receipts for Patrika		
Magazine Printing Expenses	5,47,568		- Special Advertisement	5,08,100	
Calender Printing Exp	55,040		- Special Help for Patrika	43,809	
Postage & Courier	83,008		- 5 Years Membership for Patrika	17,000	
			- Annual Membership	251	
		6,85,616			5,69,160
To Donations -			By Special Help		
- for Education	1,17,825		- for Education	1,18,000	
- for Annapoorna	3,91,000		- for Annapoorna	5,06,275	
- for Mahila	1,00,500		- for Mahasabha	49,703	
- for Other	84,160		- for Others	70,923	
		6,93,485			7,44,901
			By Interest Income		
To Bank Charges		551	-On FDR's	1,76,125	
To Professional Expenses		22,000	-On Saving Account	10,214	
To Website Development Exp		41,200			1,86,339
To Conveyance Exp		3,600			
To Miscellaneous Expenses		26,163			
To Printing & Stationery		23,851			
To Excess of Income over Expenditure		3,934			
Total		**15,00,400**	**Total**		**15,00,400**

For Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha

President Pradeep Chaturvedi

Secretary Muninder Chaturvedi

Treasurer Mahesh Chand Chaturvedi

Place: Delhi

Date: 19.10.2021

As per our separate report of even date attached.

For Shiv & Associates

Chartered Accountant

FRN 009989N

CA Manish Gupta

(Partner)

Membership No. 095518

UDIN : 21095518AAAASIV4G7

SHRI MATHUR CHATURVEDI MAHASABHA

Annexure-I

Other Kosh / Funds		Amount (Rs.)
A	**Special Education Fund** As per last Account	51,800
B	**Kanya Chikitsha Kosh** As per last Account	1,00,000
C	**Malvidya Corpus Fund** As per last Account	1,00,000
D	**Mahila Sahitya Kosh** As per last Account	1,21,000
E	**Ayurvedic Study Corpus Fund** As per last Account	1,00,000
	Total	**4,72,800**

Annexure - II

Detail of Income & Expenditure Account (Dr. Balance)	**Amount (Rs.)**
As per last Account	1,63,608
Add: Taxes Paid	9,419
Less: Excess of Income over Expenditure	3,934
Total	**1,69,093**

Annexure - III

Prepayment of Amount received for Annapoorna

Particulars	Amount (Rs.)
Opening Balance as on 01.04.2020	**10,82,771**
Fund Received during the year	14,48,603
Fund Transfer to Income & Expenses	5,06,275
Balance at the end of the year 31.03.2021	**20,25,099**

Note: Contribution received for the five years, hence one-fifth is being transferred to Income & Expenditure Account and balance is shown as Prepayment

SHIV & ASSOCIATES ★ CHARTERED ACCOUNTANTS ★ NEW DELHI

निवेदन

दिनांक 20 नवंबर 2021 तक संशोधित

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति आदि के अंतर्गत प्रदान की जा रही है। अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 39 लाभार्थी परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। प्रत्येक परिवार क्रो अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वार्षिक 24,000/- रुपए भेजे जाते है।

आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है।

इस सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2021-22 में अभी तक त्रैमासिक (अप्रैल-जून, जुलाई-सितंबर तथा अक्टूबर-दिसंबर) रू. 6,32,100/- राशि सीधे बैंक खाते ने स्थान्तरित की जा चुकी है।

वार्षिक सहयोग राशि 9 लाख रुपए अनुमानित है।

आपसे अनुरोध है कि 6 माह के लिए 12,000 रुपए या वार्षिक 24,000 रुपए की राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

समाज के निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि का वर्ष 2021-22 में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

1. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
2. श्री स्वयंभू चतुर्वेदी, बंगलोर - 12,000/-
3. श्री असीम चतुर्वेदी, अलीगढ़ - 12,000/-
4. श्री जयंत कुमार चतुर्वेदी लखनऊ (75वें जन्मदिन पर) - 7575/-
5. श्री मनोज चतुर्वेदी बैंगलोर - 12,000/-
6. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
7. सुश्री शिवानी चतुर्वेदी,बैंगलोर - 24,000/-
8. श्री आनंद श्री भास्कर एवं सुश्री जूही चतुर्वेदी -12,000/-
9 . श्री अनुज चतुर्वेदी दिल्ली -12,000/-
10. श्री अविनाश जी, कानपुर - 12000/-
11. श्री जे. पी. चतुर्वेदी - 2500/-
12. सुश्री ममता चतुर्वेदी - 2100/-
13. डॉ. श्रीमती प्रीति मिश्रा, बीकानेर - 5000/-
14. श्रीमती कुमुद चतुर्वेदी - 50,000/-
15. श्री प्रतीक पांडे, नॉएडा - 12,000/-
16. कैप्टन अनिल चौबे, गुड़गाँव - 12,000/-
17. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
18. श्री मनोज चतुर्वेदी, सागर - 2,000/-
19. श्रीमती आरती चतुर्वेदी,लखनऊ - 12000/-
20. गुप्त सहयोग - 24000/-
21. स्व. श्री प्रभात चतुर्वेदी की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12,000/-
22. बाबू श्री ओंकार नाथ जी स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी,कानपुर द्वारा -12000/-
23. श्री निशीथ चतुर्वेदी USA - 5100/-
24. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
25. एड. सुभांग सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ) -2100/-
26. श्री पीयूष चतुर्वेदी (कमतरी/ बैंगलोर) - 12,000/
27. श्री संजय मिश्रा (कानपुर) - 2,100/-
28. श्री मनीष चतुर्वेदी (ग्वालियर) ने स्व. मुरलीधर चतुर्वेदी (ग्वालियर) की स्मृति में 12,000/-
29. सुश्री सौम्या (श्रीलंका), श्री कौस्तुभ (यूएसए) तथा श्री सुमेध (यूएसए) ने पिता श्री गणेश जी चतुर्वेदी (लखनऊ) के जन्मदिन के उपलक्ष्य में 12,000/-
30. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
31. डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा 12,001/-
32. श्री कृष्णकांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/ लखनऊ) अपनी पत्नी शीला चतुर्वेदी की स्मृति में 12,000/-
33. श्री अनुराग चतुर्वेदी (होलीपुरा/गुरुग्राम) द्वारा आनंद सिंह परिवार की और से 15,000/-
34. श्री अपूर्व चतुर्वेदी (होलीपुरा/लंदन) सुपुत्र डा. प्रदीप चतुर्वेदी (सभापति) द्वारा जन्मदिन पर 12,000/-
35. गुप्त सहयोग 24,000/-
36. श्री मनीष चतुर्वेदी,गुरुग्राम -12000/-
39. श्री सौरभ पाण्डे नॉएडा SCP MEMORIAL EDUCATION TRUST 10,000/-
40. श्री के.सी. पांडे,नोयडा -12000/-
41. श्री देवेंद्र नाथ कौशाम्बी - 12000/-
42. श्रीमती आशा चतुर्वेदी, दिल्ली - 48000/-
43. श्री मदन चतुर्वेदी, कोलकाता -24000/-
44. श्रीमती कुसुमलता चतुर्वेदी,कोटा - 12000/-
45. श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी, भोपाल ने स्वं. सुबोधचन्द्र जी स्मृति में - 5000/-

वित्तीय वर्ष 2021-22 में
प्राप्त सहयोग राशि - रु. 5, 57, 076/-
वित्तीय वर्ष 2021-22 में
हस्तांतरित राशि - रू 6,32,100/-
सभी को विनम्रतापूर्वक आभार
सहयोग राशि भेजने के लिए :-
महासभा खाता विवरणः
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

*सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई-मेल आई डी तथा दूरभाष की जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, (9871170559)

वेद माता गायत्री

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' वृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्द सामहम।
मासानां मार्गशीषोऽहमूतूनां कुसुमाकरः।।

भगवद् गीता में भगवान कहते हैं, मै समस्त वेदों में सामवेद और छन्दों में गायत्री हूँ। समस्त महीनों में मैं मार्गशीर्ष(अगहन) तथा ऋतुओं में बसंत ऋतु हूँ। सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वत्र एक नाद ॐ गूँज रहा था इसलिये ॐ को ''अक्षर-ब्रह्म'' परमात्मा का स्वरूप व सृष्टि का आदि कारण माना गया है। ॐ को ही प्रणव कहते हैं। ब्रह्मा जी को सर्वप्रथम 'प्रणव' का बोध हुआ और प्रणव से ही सात व्याहृतियों का प्रादुर्भाव हुआ। तत्पष्चात ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम 24 अक्षरों वाले '' तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात'' गायत्री मंत्र की रचना की। इस 24 अक्षर वाले मंत्र के प्रत्येक अक्षर में ऐसे सूक्ष्म तत्व सन्निहित थे जिनके पल्लवित होनें पर वेद की चार शाखाएं -ऋग-यजु-साम और अथर्व उद्भूत हुई। इन चार वेदों से ही अनेक प्रकार की विद्याओं और शास्त्रों का जन्म हुआ, इसी कारण से 'गायत्री' को वेदों की माता कहा जाता है। सब मन्त्रों का आदि मूल होने के कारण गायत्री को 'महामंत्र' भी कहते हैं। गायत्री कल्पवृक्ष, अमृत, कामधेनु और पारस है। गायत्री का अर्थ है- गाय- जो पढ़े जपे गान करे। त्री- उसकी रक्षा करे वह गायत्री। गायत्री छन्द है। सन्ध्या में इनके नाम भी- गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप-वृहति, पंक्ति, त्रिष्टुप जगती लिए जाते हैं।

वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों आदि में गायत्री की महिमा का वर्णन किया गया है। अथर्व वेद के '' सूर्योपनिषद'' में भी गायत्री मंत्र है, प्रथम वेद ऋगवेद गायत्री से प्रारम्भ है। यजुर्वेद में वर्णित व्याहृतियुक्तं गायत्री मंत्र के आदि में प्रणव लगा कर गायत्री मंत्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियों योनः प्रचोदयात।''

व्याहित शब्द का अर्थ है- व्या- व्यापक। ह- हरने वाली। ति- ताप। अर्थात जो दैहिक, दैविक और भौतिक तापों को हरने वाली सर्वत्र व्यापक है उसे ''व्याहृति'' कहा जाता है। व्याहृतियॉ सात है- भूः-भुवः- स्वः- महः- जनः-तपः और सत्यम। ये सातों व्याहृतियां यथार्थ में मंत्र स्वरूपा है। उक्त सातों व्याहृतियों में से पहली तीन व्याहृतियॉ भूः भुवः और स्वः को महाव्याहृति कहा जाता है। उक्त तीनों मंत्र जीवन के आधार भूत, उन्नति के सारभूत तथा तीनों तत्वों के प्रकाश हैं। अखिल ब्रह्माण्ड में जहॉ जो कुछ भी है, त्रिगुणमयी सृष्टि का वह सब कुछ उक्त तीन महाव्याहृतियों में अन्तर्निहित है।

'' वालां वालादित्य मण्डलम मध्यस्थां रक्त वर्णा''

मॉ गायत्री बाल आदित्य में विराजमान है, 4 मुख, 4 भुजाऐं हैं, दण्ड, कमण्डल, अक्षमाला और अभय मुद्रा है, हंस पर सवार है, ब्रह्म देव है, ऋग्वेद का प्रसार करती है, मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। चतुर्वेदियों का परम्परा प्राप्त मंत्र गायत्री है, चतुर्वेदी समाज में इसका जो सम्मान है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इसकी उपासना ही सबसे बड़ी साधना एवं दीक्षा रही है। गायत्री की साधना से ही समाज में अनेक जातीय रत्न हुए। जिन्होनें समाज की गरिमा को नई उचाइयॉ प्रदान की।

गायत्री साक्षात ब्रह्म स्वरूपा हैं, सत- चित और आनन्द को देने वाली तथा मुक्तिदायिनी है। गायत्री मंत्र- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियों योनः प्रचोदयात।'' में हम तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले भगवान सूर्य नारायण के उत्तम तेज का ध्यान करते हैं, वह हमारी बुद्वि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें। ॐ- परमात्मा, भूः- पृथ्वी, भुवः- अन्तरिक्ष, स्वः- स्वर्ग, तत- वह, सवितुर- सूर्यनारायण का, वरेण्यम-उत्तम, भर्गो- तेज, देवस्य- देव का, धीमहि- ध्यान करता हूँ, धियो- बुद्वि को, यो-जो, नः- हमारी, प्रचोदयात- प्रेरित करें। मंत्रो में सर्वश्रेष्ठ इस एक गायत्री मंत्र की उपासना से ही समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है तथा भक्ति- मुक्ति प्राप्त होती है।

।। जय माता की।।

सांस फूलने का आयुर्वेदिक उपचार....

- वैद्यराज

बहुत से लोग गलतफहमी के चलते डिसप्निया (सांस फूलना) रोग को दमा रोग ही समझ लेते हैं। लेकिन डिसप्निया (सांस फूलना) और दमा (एस्थमा) रोग में थोड़ा सा फर्क होता है।कई लोगों को गलतफहमी होती है कि मोटा होने की वजह से ही सांस फूलती है पर ऐसा कुछ नही है,पतले लोगो की भी ऐसे ही सांस फूलती है और इसका कारण हमारे शरीर में नही अपितु पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण, अस्वच्छ हवा में सांस लेना और गलत कार्यशैली हो सकती है।

कारण

ज्यादा उम्र के लोगों को बारिश के मौसम में सांस की नली के पुराने जुकाम आदि रोगों के कारण।

दिल की धड़कन का काफी तेज चलने के कारण

अंजीर...

जिन लोगो की सांस फूलती है, उनके लिए अंजीर अमृत के समान है क्योंकि अंजीर छाती में जमी बलगम और सारी गंदगी को बाहर निकाल देती है। जिससे सांस नली साफ़ हो जाती है और सुचारू रूप से कार्य करती है। इसके लिए आप तीन अंजीर गरम पानी से धोकर रात को एक बर्तन में भिगोकर रख दीजिये और सुबह खाली पेट नाश्ते से पहले उन अंजीरों को खूब चबाकर खा लीजिये। उसके बाद वह पानी भी पी लें। इस नुस्खे का प्रयोग लगातार एक महीने तक कीजिये। इसके प्रयोग से फर्क आपको खुद ही महसूस होने लगेगा।

तुलसी ...

तुलसी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है और श्वसन तंत्र पर बाहरी प्रदूषण और एलर्जी के हमले से रक्षा करने में समर्थ है। इसलिए जिनको भी सांस फूलने की या दमा की शिकायत हो उन लोगो को तुलसी से बने इस काढ़े का इस्तेमाल अवश्य ही करना चाहिए। इसके लिए आधा कप पानी में 5 तुलसी की पत्ती,एक चुटकी सौंठ पाउडर,काला नमक और काली मिर्च डालकर उबाल ले। ठंडा करके जब यह काढ़ा गुनगुना सा रह जाए तब इसका सेवन करे। नित्य प्रति इस काढ़े के सेवन से आपके सांस फूलने की समस्या जड़ से समाप्त हो जाएगी।

अजवायन...

सांस फूलने की समस्या अक्सर श्वास नली में सूजन या श्वास नली में कचरा आ जाने की वजह से ही उत्पन्न होती है। श्वास नली को साफ़ करने का सबसे प्रभावी तरीका होता है– स्टीम या भाप लेना। भाप लेने से यदि श्वास नली में सूजन है तो उसमे आराम हो जाता है और कचरा भी निकल जाता है तो इसके लिए आपको अजवायन पीसकर पानी में उबलनी है। फिर इस अजवायन वाले पानी की भाप लेनी है। क्योंकि अजवायन की भाप सूजन को खत्म और दमे और सांस फूलने की समस्या में राहत दिलाती है।

तिल का तेल...

यदि ठंड की वजह से छाती जाम हो जाए या रात के समय दमे का प्रकोप बढ़ जाए और सांस ज्यादा फूलने लगे तो तिल के तेल को हल्का गर्म करके छाती और कमर पर गरम तेल की सेक करे। इस प्रकार आपकी छाती खुल जायेगी और आपको सांस फूलने की समस्या में राहत मिलेगी।

अंगूर ...

सांस फूलने या दमा की समस्या में अंगूर बहुत लाभदायक होता हैं। इस समस्या में आप अंगूर भी खा सकते है या अंगूर का रस का भी सेवन कर सकते हैं। कुछ चिकित्सकों का तो यह दावा है कि दमे के रोगी को अगर अंगूरों के बाग में रखा जाए तो दमा,सांस फूलने या कोई भी श्वसन सम्बन्धी समस्या में शीघ्र लाभ पहुंचता है।

चौलाई....

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि चौलाई के पत्तों का ताजा रस निकालकर और उसमे थोड़ा शहद मिलाकर प्रतिदिन सेवन किया जाए तो अतिशीघ्र लाभ पहुंचता है। चौलाई के पत्तो का प्रयोग आप किसी भी रूप में कर सकते है। चाहे तो चोलाई के पत्तो का साग भी खा सकते है। चोलाई के पत्ते इस समस्या में रामबाण औषधि है।

लहसुन...

(चतुर्वेदी नहीं खाते हैं)

लहसुन भी सांस फूलने की समस्या में अत्यंत लाभकारी औषधि का कार्य करता है। इसके लिए लहसुन की 3 कलियों को दूध में उबालना है और फिर उस दूध को छानकर सोने से

पूर्व पीना है। याद रहे इसके बाद कुछ भी न खाये या पिए। कुछ ही दिनों के निरन्तर प्रयोग से आपको इसके चमत्कारी परिणाम देखने को मिलेंगे।

सौंफ.....

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि सौंफ का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आएगी ही नही। क्योंकि सौंफ में बलगम को साफ करने के गुण विद्यमान होते हैं | यदि दमे के रोगी और सांस फूलने वाले रोगी नियमित रूप से इसका काढ़ा इस्तेमाल करते रहें तो निश्चित रूप इस समस्या से निजात मिल जाएगी।

लौंग.....

लौंग और शहद का काढ़ा पीने से श्वास नली की रुकावट दूर हो जाती है और श्वसन तंत्र मजबूत बनता है। इसके लिए चार-छः लौंग को एक कप पानी में उबाल ले और फिर उसमे शहद मिलाकर दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है।

हींग....

सांस फूलने की या श्वसन सम्बन्धी कोई भी समस्या हो यदि हींग का प्रयोग दैनिक दिनचर्या में हर रोज किया जाए तो आपको कभी सांस फूलने की समस्या आएगी ही नही।बाजरे के दाने जितनी हींग को दो चम्मच शहद में मिला ले। इसको दिन में तीन बार थोड़ा-थोड़ा पीने से सांस फूलने की समस्या एकदम ठीक हो जाती है |

नीबू ...

सांस फूलने या दमा की समस्या में नीबू का रस गरम जल में मिलाकर पीते रहने से यह समस्या धीरे धीरे जड़ से खत्म हो जाती है | सांस फूलने की समस्या में केला अधिक मात्रा में नही खाना चाहिए | पानी हल्का गरम पीना चाहिए |पानी उबालकर और थोड़ा हल्का गरम पीना ही लाभकारी होता है।

एसिड बनाने वाले पदार्थ न ले।

दमा या सांस फूलने की समस्या होने पर भोजन में कार्बोहाइड्रेट, चिकनाई एवं प्रोटीन जैसे एसिड बनाने वाले पदार्थ कम मात्रा में ही लें क्योंकि इनसे शरीर में एसिड बनता है जिससे श्वसन में बाधा उत्पन्न होती है इसलिए ताज़े फल, हरी सब्जियां तथा अंकुरित चने जैसे क्षारीय खाद्य पदार्थों का सेवन भरपूर मात्रा में करें।

वैष्णवों में ऊर्ध्व पुण्डू

– प्रभात कुमार चतुर्वेदी, इटावा

श्री वैष्णव मत के अनुयायी सदैव अपने मस्तक पर श्वेत तिलक की रेखायें व उनके बीच श्री धारण करते है। इसे उर्ध्व पुण्डू भी कहते है। इसके बारे में जिज्ञासा रहती है। अतः उसके समाधान हेतु किन्चित जानकारी समीचीन होगी। वैज्ञानिक दृष्टि से मानव की उन्नति उसके विचारों की शुद्धता और सात्विकता से परिपुष्ट होती है। इसी बात को ध्यान में रखकर भृकुटि और ललाट के मध्य स्थित विचार केन्द्र पर ऊर्ध्व पुण्डू धारण करने का विधान है इसे ही तिलक भी कहते है योग की दृष्टि से इसी स्थान पर आज्ञा चक्र रहता है। यहीं इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़यों का संगम होता है। शरीर में नाड़ियों का यह संगम स्थल ब्रम्हांड में स्थित भारत वर्ष के प्रयागराज के गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम स्थल के समान है। इस स्थान पर ऊर्ध्व पुण्डू धारण कर सुषुम्ना नाड़ी को जागृत करने और दिव्य दृष्टि प्राप्त करने की कल्पना विहित है। तिलक की तीन रेखायें एक दृष्टि से तीनों देवता ब्रम्हा, विष्णु, महेश, तीनों व्याहृतियाँ भूः भुवः स्वः, तीनों छंदों गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, तीनों वेद ऋग, यजु, साम, तीनों स्वर हस्व, दीर्घ, लुत, तीनों अग्नि आहवनीय, गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, तीनों ज्योति सूर्य, चंद्र, अग्नि, तीनों काल भूत, भविष्य, वर्तमान, तीनों अवस्था जाग्रति, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तीनों आत्मा क्षर, अक्षर, पुरूषोत्तम को प्रतीक रूप में प्रदर्शित करती है। भारतीय लोकमत भी मस्तक सूना न रखने के पक्ष में रहा है। प्राचीन काल की मूर्तियों और छवियों में मस्तक पर तिलक अंकित देखा जा सकता है। हमारे वेद, पुराण, उपनिषद, स्मृति, संहिता, महाभारत आदि सभी कहीं तिलक की महत्ता प्रतिपादित मिलती है। वैष्णव धर्म में यह अनिवार्य अंग और पांच संस्कारों में से एक है। इसकी भिन्न भिन्न शाखाओं में इसके रूप और आकार देखे जा सकते है जो उनके भेदों उपभेदों की पहचान कराते है। रामानुज, मतावलियों की तिंगल शाखा के ऊर्ध्व पुण्डू में विष्णु क्षेत्र की श्वेत भृतिका की दो रेखायें भौ से सिर के बालों तक रहती हैं। जिनका आकार विष्णु पाद के अनुरूप होता है। पाद आकृति के नीचे भृतिका का आसन रहता है जो विकसित कमल या सर्प के फण का द्योतक है। दोनों रेखाओं के मध्य विष्णु भगवान को अभिषेक किये गये कुमकुम या हल्दी की दीपशिखा के आकार की श्री धारण की जाती है।

इनकी संख्या भी निश्चित है। शरीर पर 12 चिन्ह अंकित करने का विधान है। मस्तक के अतिरिक्त 1- उदर, 2- हृदय, 3- कंठ, 4- दाहिना कुक्ष, 5— दाहिना बाहु. 6— दाया कंधा, 7- बाई कुक्ष, 8 — बाई बाह, 9 — बांया कंधा, 10- पीठ, 11- कंठ के पीछे।

मैनपुरी में होली गायन

- अम्बर पाण्डेय, मैनपुरी/भोपाल

सम्पूर्ण श्री माथुर चतुर्वेदी समाज होली के त्यौहार को बड़ी ही मस्ती में मनाता है। मैनपुरी का समाज कोई अपवाद नहीं है। 'होरी में नित नई धूम मचै' मैनपुरी में। हमारे समाज में होलीगायन का विशेष महत्व है। हर स्थान की अपनी–अपनी विशेषता है। मैनपुरी की अपनी ही विशेषता है। यहाँ की होलियों में साहित्यिक और आध्यात्मिक पुट भी मिलता है। ये होलियॉ अधिकतर राग काफी में होती हैं पर अन्य रागों से कोई परहेज नहीं है। रसिया आदि का भी भरपूर आनन्द लिया जाता है। रस की यह फुहार बसन्त पंचमी से झरने लगती है और होली की परवा आते–आते झमाझम बरसने लगती है। होली गायन मन्दिरों मे नियमित होने की परंपरा आज भी संरक्षित है जहाँ बुज़ुर्गों के संरक्षण मे बच्चे भी पारंगत हो जाते है। इसके अतिरिक्त नित्यप्रति किसी न किसी रसिक के निमन्त्रण पर उसके निवास पर रंग–रस की झड़ी लगती ही रहती है। होली गायन का यह नशा दिन–प्रति–दिन बढ़ता ही जाता है और आनन्द की वृद्धि दिन दूनी रात चौगुनी होती जाती है।

इस परम्परा के पुराने संवाहकों में जो महत्वपूर्ण नाम हैं उनमें स्वनामधन्य चम्पा लाल पाण्डेय(मेरे बड़े बाबा), त्रिभुवन दास (मुनमुनियाँ चाचा), बिहारी लाल (बिहारी बाबा), जुगल किशोर (जुगले चाचा घी वाले), टीकाराम जी (टीके दद्दा) नवल किशोर (बिटऊ चाचा), प्रमुख हैं। इनसे पूर्व के गयकों का मुझे स्मरण नहीं है। अतः उनका उल्लेख न कर पाने के लिए क्षमा चाहता हूँ। इनके बाद स्व ब्रजेन्द्र नाथ (लालू बाबा) स्व सुरेश दादा, स्व प्रकाश चन्द्र और स्व सुबोध चन्द्र (बिटुआ चाचा), स्व उपेंद्र नाथ (छुन्नौ चाचा), स्व मुरली भाईसाहब ने गद्दी सम्हाली। स्व भूपेन्द्र चाचा का तबले पर सहयोग अद्भुत था। वर्तमान समय में इस परम्परा को गति प्रदान करने वालों में सर्वश्री हर स्वरूप पाण्डेय (हरेश चाचा), उमेश चन्द्र चतुर्वेदी (दादा) ब्रजेन्द्र नाथ (बिज्जेभाई सा), महेन्द्र (छप्पर वाले), धर्मेश, शिशिर'करुणेश', मनोज दवाई वाले, बिनय सोती (अभी करोना काल में ही निधन हुआ है) प्रमुख है। नई पीढ़ी मे भी होली गायन का उत्साह संतोषप्रद है। स्वर्गीय चम्पा लाल पाण्डेय जी की गाई हुई होलियों में से कुछ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। ऐसा नहीं है कि इनके गायन पर उनका एकाधिकार था। उपस्थित समाज में से कोई भी किसी भी होली को उठा सकता था जिसके गायन में पूरा समूह साथ देता था। यह परम्परा आज भी कायम है।

-- होलियाँ --

1– होरी हो ब्रजराज दुलारे।

अब काहे जाय छिपे जननी ढिंग रे द्वै बापन बारे।

कै तौ निकसिकैं होरी खेलौ कै मुखसौं कहौ हारे, जोरि कर आगैं हमारे।। होरी हो।।

बहुत दिनन सौं तुम मनमोहन फागहि फाग पुकारे।

अबकी देखहु सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे चलैं जहँ कुमकुम न्यारे ।। होरी हो।।

बहुत अनीति उठाई है तुमने रोकत गैल गिलारे।

नारायण अब जान परैगी,आवौगे द्वारें हमारे, दरस अपना दिखला रे।। होरी हो।।

2– डगर मेरी छाँड़ौ श्याम बिंध जवौगे नैनन में।। डगर।।

भूल जाउगे सब चतुराई , हौं मारौगी सैनन में।। डगर।।

जौ तेरे मन में होरी खिलन की तौ लैचल कुंजन में।। डगर।।

चोया चन्दन अतर अरगजा छिरकौंगी फागुन में।। डगर।।

चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि लागी है तन–मन में।। डगर।।

3– फाग खेलन कौं मेरौ जिय चाहै मैं ब्रज की कुंजन में जाउँगी।। फाग।।

रंग में रंगौगी उनकौ पीताम्बर सुरंग चुनरिया उढ़ाउँगी।। फाग।।

जौ तुम भए हौ खिलाड़ी होरी के गलवा तोहि लगाउँगी।। फाग।।

उमगि मिलौंगी आनंदघन सौं, ख्याल खुशाल मनाउँगी।। फाग।।

4– कासौं कहों मैं जिय कौ हाल मोहि कीन्ही संवरिया नै बावरी।।कासौं।।

इक बिरहा दूजै लाज गुरुजन की तीजै मिलन की है चाव री।कासौं।।

बिरह कौ सागर सूखत नाहीं, भई हौं भँवरवा की नाव री।। कासौं।।

गावै गूदड़ उर बसहु बिहारी मोहि छवि लागत है रावरी।। कासौं।।

5- गारी न देउ जसुदा के लला, होरी खेलन आए तौ खेलौ भला।। गारी।।

गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख कहौंगी भला।। गारी।।

नन्द जसोदा सहित बिकैहौ जौ गिरिहै मेरे कर कौ छला।। गारी।।

बृन्दावन की कुंज गलिन में दधि कौ दान न पैहौ भला।। गारी।।

जौ तुम चाहौ भलाई कन्हाई सीधी गैल चले जाऔ भला।। गारी।।

6- पौरि बृषभान की आज रंग झर बरसै री।। पौरि।।

उड़त गुलाल लाल भए बादर, अति रंग सरसै री।। पौरि।।

खेलत दामिनि घन सुन्दरि कृष्ण रसिक संगै री।। पौरि।।

हीरासखी फागुन के महीना में सावन सरसै री।। पौरि।।

7- नैहर में दाग लगौ चुनरी।। नैहर में।।

ओढ़ि चुनरिया चली मायकें, लोग कहैं धन कहाँ फहुरी।। नैहर में।।

ना कहुँ भेंट भई रंगरिजवा, ना मिलौ धुबिया करै उजरी।। नैहर में।।

हाट लगी है सौदा करलेहु मंहगा है साबुन या नगरी।। नैहर में।।

कहत कबीर सुनौ भाई साधौ, बिन सतसंग न होइ उजरी।। नैहर में।।

8- जाकाहू कौं मिलै स्याम, कहिदीजो हमारी राम राम।। जाकाहू।।

नगर नगर और द्वारे द्वारे होरी खेलन की धूम-धाम रे।। जाकाहू।।

भूषन-बसन रधिका ने त्यागे ध्यान तुम्हारौ ही आठौ याम रे।। जाकाहू।।

कृष्णानंद अरज इतनी है क्यों छांड़ी ऐसी बाम रे।। जाकाहू।।

9- मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ
मैं तौ तोही कौ न छाँड़ौगी अरे साँवरे।। मानौ।।

यामें लाज सरम की कहा बात रे
जब प्रेम के पंथ दियौ पाँव रे।। मानौ।।

याही नगर के लोग लुगाई धरैंगे नाम तौ धरैं नाम रे।

सासु लड़ै या ननदिया लड़ै मोसौं रूठ क्यों न जाय सभी गाँव रे।

तू मत रूठै अरे मेरे प्यारे मैं बैठी रहौंगी तेरी छाँव रे।। मानौ।।

अपनी मौज तेरे संग चलौंगी पल्ला पकरि सौ-सौ दाँव रे।। मानौ।।

अहो स्याम सुन्दर मोहि बतावौ मैं तेरी कहाय कहाँ जाउँ रे।। मानौ।।

10- कर लियें अबीर-गुलाल साँवरौ खेलत होरी।। कर लियें।।

कृष्ण गह्यौ ललिता कौ नीलाम्बर उनहूँ पीताम्बर गह्यौ है बहोरी।

छूटी अलक मुकट लपिटानी मानौ व्यालिनी ने चन्द्र ग्रस्यौ री।। कर लियें।।

केसर कुमकुम रंग लै मिलि सब बसन सुरंग रंगौ री।

पकरि नचावन चहति गुपालहि तौ लेहु बैन बृषभान किशोरी।। कर लियें।।

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ और सखी धुनि ढोल टंकोरी।

गावत चलीं है विवाह ललित सुर शिव बिरंच सनकादि सखी री।। कर लियें।।

मदन मयंक दिवाकर लज्जित और कवी को बरन सकौ री।

गावत सुनत चार फल पावत लखि हरि पद द्विज सूर तरौ री।। कर लियें।।

11- आज श्याम सौं मैं बैर करूँगी।।आज।।

कोई कारी वस्तु जगत की कबहूँ ना बिलसूँगी।।

कोयल कूक हूक मुरवन की श्रवनन नाहिं सुनूँगी, भ्रमर के पर नौचूँगी।। आज।।

कारी घटा की छटा कौं अटा चढ़ि कबहूँ ना निरखूँगी।

गगन दृगन सौं ओट करूँगी, चन्द्र कलंक हरूँगी, रात में पग न धरूँगी।। आज।।

दाँतन मिस्सी कबहु न लगैहौं, अँखियन कजरा न दूँगी।

कालिन्दी में पग नहिं बोरूँ, मृगमद अंग न धरूँगी, नील पट धोइ धरूँगी।। आज।।

कालदेव कलीमाता का पूजन अब न करूँगी।

सिद्धि के हेतु बिरह में सजनी काग सगुन ना लूँगी, केश निज नौच धरूँगी।। आज।।

दीपक बारि बैठ अंगना में रैन कौ तिमिर हरूँगी।

दर्पण माँहि देखि अंखियन कौं पुतली काढ़ि धरूँगी,जनमभर अंधरी रहूँगी।। आज।।

12- सुनिआई री आज नई होरी की भनक,
रंग डारूँगी वाहीपै जानें तोरौ है धनुष।।सुनि ।।

करि श्रृंगार चलीं ब्रजबनिता कोऊ अबीर कोऊ अरगजा मलत।

खेलत राम जानकी के संग, उतसौं आवत पिचकारी की सनक।। सुनि।।

एक कहै रंग डारौ लखन पै ,एक कहै या खिलाड़ी पै तनक।

एक उमगि मुख मलत लाल कौ, एक हँसत दै-दै तारी की ठनक।। सुनि ।।

जो आनन्द भयौ मिथिलापुर शेष सारदा बरन न सकत।

तुलसीदास धन धन राजा दसरथ धन्य धन्य मिथिलेश जनक।। सुनि।।

महाशिवरात्रि

- विनीता चतुर्वेदी, देहरादून

हम हिन्दुओं में भगवान शिव का स्थान सर्वोच्च हैं। महाशिवरात्रि का पर्व भगवान शिव के शक्ति से पार्वती के रूप में जन्म लेने के बाद उनसे पुनर्मिलन का पर्व है। श्री रामचरितमानस के बालकाण्ड में प्रसंग है कि : एक बार भगवान शिव अपनी पत्नि शक्ति के साथ मुनि अगस्त के आश्रम से राम कथा सुन कर वापस लौट रहे थे। जंगल में उन्हें मानव रूप में राम दिखाई दिये जो जंगल में सीता को खोज रहे थे। भगवान शिव ने उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया तो शक्ति ने आश्चर्य जनक हो कर उत्सुकतावश उनसे प्रश्न किया कि आप कैसे एक साधारण मनुष्य को नमन कर रहे हैं? शिव ने उन्हें बताया कि ये राम हैं, भगवान विष्णु के अवतार। पर शक्ति उनकी बात से संतुष्ट नही हुईं। तो शिव ने शक्ति से कहा आप स्वयं संतुष्टि कर लीजिये। भगवान शिव वहीं विश्राम करने लगे और मां शक्ति श्री राम की परीक्षा लेने हेतु आगे बढ़ गईं। शक्ति स्वयं सीता का रूप धारण कर भगवान राम के सम्मुख प्रकट हुईं। परन्तु राम ने तुरन्त उन्हें पहचानते हुये पूछा कि देवी आप अकेले यहाँ जंगल में क्या कर रही हैं? शिव कहाँ हैं ? यह सुन कर सती एकदम से सकते में आ गईं और उनको शिव की बात की सत्यता का आभास हुआ। शक्ति शिव के पास बापस तो आ गईं। पर भय के कारण पूरी बात भगवान शिव को नहीं बताई। केवल कहा कि आप ठीक ही कह रहे थे। भगवान शिव ने ध्यान लगा कर पूरा प्रकरण ज्ञात कर लिया और जान गये कि सती माँ सीता का रूप धारण कर के राम के पास गईं थी।

परन्तु इस प्रकरण से एक अप्रिय स्थिति उत्पन्न हो गई। शिव के लिये सीता माँ का रूप थीं। अतः अब शिव के लिये सती के साथ सामाजिक संबन्ध का स्तर बदल गया और शिव ने स्वयं को सती के साथ पत्नि सम्बन्ध से विमुख कर लिया। सती भी शिव के साथ उत्पन्न इस सम्बन्ध परिवर्तन से विचलित रहने लगी। पर उन्होंने शिव के धाम कैलाश पर्वत को नहीं छोड़ा।

एक दिन सती ने देखा कि कुछ देवतागण आकाश मार्ग से

कहीं जा रहे हैं। सती ने भगवान शिव से इस सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने बताया कि आपके पितादक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया। चूंकि बृह्मा के दरबार कभी दक्ष और शिव में किसी बात पर मनमुटाव हो गया था। उसके चलते दक्ष ने शिव और सती को इस यज्ञ में आमंत्रण नहीं भेजा। सती को अपने पिता की यह बात अच्छी नहीं लगी और वे बिना निमंत्रण के भी यज्ञ में जाने का मन बनाने लगीं। भगवान शिव के समझाने के विपरीत, कि विवाह हो जाने पर लड़की अपने पति की हो जाती है। अतः विवाहिता को बिना बुलाये पिता के घर भी नहीं जाना चाहिये। फिर भी सती की जिद पर शिव ने पीहर जाने की अनुमति दे दी। उनके साथ अपना एक गण वीरभद्र भी भेज दिया। पिता ने बिना बुलाये आई अपनी ही बेटी को उचित सम्मान नहीं दिया। सती उस यज्ञ कुण्ड की ओर गईं जहां सभी देवता और ऋषियों बैठे थे और धू धू करती अग्नि में अहुतियाँ डाली जा रही थीं। देवी सती ने वहाँ सभी देवताओं के भाग रखे देखे पर शिव का भाग वहाँ नहीं था। सती को पिता के इस व्यवहार पर अत्याधिक वेदना हुई। अपने इस अपमान से व्यथित सती ने यज्ञ कुण्ड़ में कूद कर स्वयं को भस्म कर डाला। यज्ञमंडप में खलबली मच गई। देवता और ऋषि मुनि भाग खड़े हुये। वीरभद्र ने क्रोध में आ कर दक्ष का मस्तक धड़ से काट कर अलग कर दिया।

सती द्वारा स्वयं को भस्म कर डालने का समाचार पा कर भगवान शिव के क्रोध की सीमा न रही। सती के जले हुये शरीर को देख कर भगवान शिव अपने आप को भूल गये। उन्होंने सती के मृत शरीर को ले कर प्रचण्ड़ ताण्डव नृत्य आरम्भ किया और उसके वेग से यक्ष के साम्राज्य का नाश कर डाला। ताण्डव का वेग सम्पूर्ण बृह्माण्ड को नष्ट करने के लिये पर्याप्त था। भयानक संकट उपस्थित देख कर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु शिव की बेसुधि में अपने चक्र से सती के शरीर के एक एक खण्ड को काट कर गिराने लगे। जब शरीर पूर्णतः खण्डित हो कर पृथ्वी पर गिर गया तब शिव पुनः अपने आप में आ गये। कहा जाता है सती के शरीर के ये खण्ड पृथ्वी पर जहाँ जहाँ गिरे वह स्थान शक्तिपीठ के रूप में परिवर्तित हो गये। तदुपरान्त भगवान शिव ने हिमालय पर्वत पर जा कर घनघोर तपस्या आरम्भ कर दी।

सती ने शरीर त्यागते समय संकल्प लिया था कि मैं राजा हिमालय के घर जन्म ले कर पुनः शंकर जी की अर्धांगनी बनूंगी। सती ने राजा हिमालय के घर पार्वती के रूप में जन्म लिया। कहा जाता है कि पार्वती ने शिव की तपस्या को समाप्त करने के लिये घोर प्रयास किया। साथ ही शिव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये कामदेव की मदद ली जो प्रेम और काम के देव के रूप में जाने जाते हैं। कामदेव ने पार्वती से भगवान शिव के सम्मुख नृत्य करने के लिये कहा। जब पार्वती नृत्य करने लगीं तो कामदेव ने शिव पर पुष्पायुध का पुष्पवाण चला दिया। इस पर भगवान शिव ने कुपित हो कर अपना तीसरा नेत्र खोल कर कामदेव को भष्म कर दिया। कहा जाता है कि बाद में कामदेव की पत्नी के अनुनय पर शिव ने कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया।

अब शिव को मनाने के लिये पार्वती ने भी घोर तपस्या आरम्भ कर दी। ऋषियों, देवताओं के कहने और पार्वती के भक्तिभाव और अनुनय से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने तपस्वी रूप को त्याग कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश हेतु पार्वती से विवाह सहमति प्रदान कर दी और फागुन की अमावस्या से पूर्व रात्रि बेला को वैवाहिक बंधन मे बंध गये। इस दिन को हम लोग महाशिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। शिव पुराण के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन शिव आराधना करने से शिव खुश होते हैं। भक्तगण इस दिन वृत/ उपवास रखते हैं और पूजा अर्चना करते हैं। शिवपुराण के अनुसार इस दिन शिव लिंग पर विशेष अभिषेक करने की परम्परा है। इस अभिषेक पांच विशेष द्रव्यों का उपयोग किया जाता है। यह द्रव्य हैं

1 दूध जो शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक है।
2 दही जो पवित्रता और सन्तान प्राप्ति हेतु शुभ है।
3 शहद जो मृदु और मीठी वाणी के लिये है,
4 घी जो विजय का प्रतीक है।
5 चीनी जो खुशी का प्रतीक है और
6 पानी जो शुद्धता का प्रतीक माना जाता है।

महाशिवरात्रि के दिन सभी भक्तगण उपवास रखते हैं। ये व्रत महिलायों और कन्याओं के लिये विशेष महत्व रखता है। मान्यता है कि यह व्रत रखने से अविवाहित कन्याओं को शिव जैसे आदर्श पति की प्राप्ति होती है और विवाहित महिलायें पुत्र प्राप्ति तथा अपने पति की उज्वल भविष्य की कामना के लिये इसे करती हैं। इस दिन भक्त सुबह उठ कर स्नान कर सबसे पहले सूर्यदेव की पूजा अर्चना करते हैं और सर्वप्रथम सूर्यदेव को जल अर्पण करते हैं। फिर शिवालय जा कर जय शिव शंकर, जय भोलेनाथ के उद्घोष और घण्टियों की गूंज के बीच उपरोक्त छः पवित्र वस्तुओं से शिवलिंग को स्नान कराते हैं। तदुपरान्त उस पर सिन्दूर का लेप लगा कर अभिषेक पूर्ण करतें हैं। अन्त में शिव के क्रुद्ध स्वभाव को शान्त करने के लिये तीन पूर्ण पत्तियों वाले बेल पत्र को शिवलिंग के ऊपर रखते हैं। कुछ लोग सुपाड़ी के पत्तों का भी उपयोग करते हैं। साथ ही प्रभु को दीर्घायु तथा मनोकामनाओं के पूर्ण करने हेतु बेर का फल अर्पित करते हैं। पूरे दिन के वृत के बाद रात्रि में फलहार कर वृत समाप्त किया जाता है। हिन्दू धर्म में महाशिवरात्रि व्रत का विशेष महत्व है।

बाल सुरक्षा

- डॉ. निखिल चतुर्वेदी, आगरा

कोविड-19 का नाम सुनते ही हर जन, बच्चा भयभीत और चिंतित हो जाते है। इन विगत कुछ समय में सभी ने अपने किसी ना किसी स्वजन को खोया है या वह अभी भी किसी बीमारी से जूझ रहा है। आजकल खबर है कि तीसरी लहर आने वाली है, सितंबर अक्टूबर माह में, यह एक अनुमान है। हमारे देश व राज्यों की सारी सरकारें और उनके हॉस्पिटल, डॉक्टर्स, निजी प्रतिष्ठान सभी इसको रोकने की तैयारी में लगे हैं। जरूरी नहीं है कि तीसरी लहर आये। यह सिर्फ एक अनुमान है। चाहे यह अनुमान भेड़िया आया भेड़िया आया ही निकले। पर इसका लाभ हमारे देश के भविष्य, हमारे बच्चों की स्वास्थ्य सेवा को बेहतर करने में मिलेगी। इससे हमारे देश में बच्चों की स्वस्थ सेवाएं सुधारने में मदद मिलेगी। जो कि शिक्षा के बाद भी उपेक्षित क्षेत्र है। यह क्षेत्र हमेशा उपेक्षित रहा है। जिससे दूसरी लहर की तरह स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रशासनिक तंत्र के असफल होने की आशंका है। ईश्वर करे यह न हो। हम सब इसका प्रयास कर रहे है। 19 वर्ष से कम उम्र के बच्चे जो कि अनुमानतः पूरी आबादी का 50 प्रतिशत हिस्सा है। हाँ अभी उनके लिए टीका उपलब्ध नहीं है। पर प्रयास जारी है। उनके लिए उपलब्ध नहीं है, इसलिए उनको बचाव ही एक मात्र रास्ता है। प्रिवेंशन इज बेटर देन क्योर।

इसके लिए कुछ सावधानियां

1. बच्चों को ज्यादातर यह एक आम वायरल की तरह होगा और साधारण दवा से काम चलेगा, जैसे पेरासिटामोल। पर कुछ बच्चे चार से 6 हफ्ते के अंदर गंभीर रूप से बीमार हो जाएंगे। जिन्हें हम एम.आई.एस.सी कहते हैं। उनको हॉस्पिटल की आवश्यकता होती है। इसमें ध्यान रखें अगर 3 दिन तक तेज बुखार, उल्टी दस्त, शरीर पर दाने हो तो डॉक्टर की सलाह लें और जांच करवाएं।
2. **मास्क** : 5 वर्ष के ऊपर वाले बच्चों को मास्क पहनाना व सोशल डिस्टेंसिंग करवाना ही एकमात्र उपाय है।
3. यह एक एरोसोल है, इसलिए वेंटिलेटेड या हवादार घर जरूरी है।अर्थात खुला हुआ घर या वातावरण लाभकारी है।
4. वातानुकूलित (ए.सी.) का प्रयोग कम से कम करें। संभवतः ना करें तो उचित होगा।
5. इम्यूनिटी बूस्टर दवाइयां और विटामिन सी का सेवन करें। पानी की भाप का यथसम्भव उपयोग करें।
6. फल, सब्जी, घर का पका शुध्द खाना खाये व खिलाए।
7. भीड़भाड़ वाले माहौल से बच्चों को दूर रखें।
8. घर का माहौल खुशनुमा रखें कोविड की चर्चा घर में ना करें। न्यूज़ हर समय ना देखें। इसका बच्चों पर गलत असर पड़ता है।
9. सात वर्ष के नीचे के बच्चों में शारीरिक और मानसिक प्रभाव देखे गए हैं, और उसके ऊपर के बच्चों में मानसिक प्रभाव देखें गए है। इसलिए बच्चों को सकारात्मक व रचनात्मक (क्रिएटिव) कार्यों व खेलों की ओर प्रेरित किया जाय। आंतरिक (इंडोर) खेलों का अधिक से अधिक उपयोग करें।
10. विदेशों में 12 से अधिक उम्र के बच्चों को टीके लगने लगे हैं। कुछ जगह 6 से 12 वर्ष के बच्चों का ट्रायल हो चुके हैं। हमारे देश में कोरोना वैक्सीन का ट्रायल चल रहा है। जब तक हम बच्चों को टीका नही लगवाते या वैक्सीनेट नहीं कर लेते। हमारे बच्चे सुरक्षित नहीं हैं। हेड वायरस असंभव है।

प्रारंभिक लक्षणों के दिखने पर अपने डॉक्टर से परामर्श अवश्य करें। यह आवश्यक है। हमारे अबोध व नाबालिग बच्चों की जिम्मेदारी हमारी है। इनका स्वयं उपचार के पूर्व एक बार डॉक्टर से सलाह अवश्य लें। अपने को व अपने परिवार को कोविड की रोकथाम के टीका आवश्यक रूप से लगवाए। एक ही इसके बचाव का उपाय है।

प्रथम पुण्य तिथि

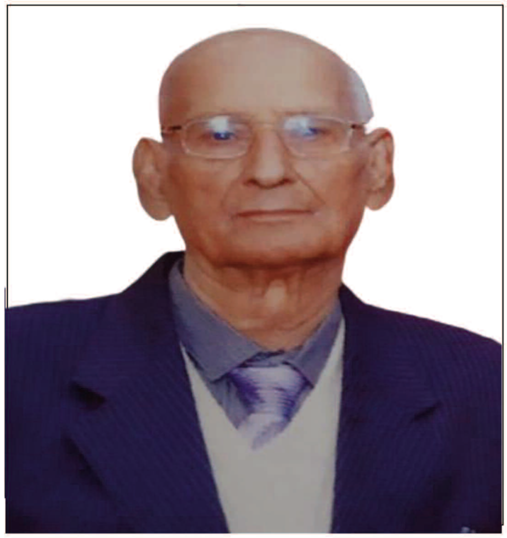

श्री प्रह्लाद दास चतुर्वेदी
(लखनऊ /बटेश्वर)
गोलोकवास : 11/12/2020

स्नेहिल और हंसमुख था जिन का आचार
करते रहे जो सभी के लिए विचार ..
बिछड़ गए वो हमसे यूं अकस्मात..
प्रार्थना है वो जहां भी हों
पाएं चिर शांति की सौगात।
उनका आशीष रहे हमेशा हमारे साथ।।

श्रद्धान्वत

उमा चतुर्वेदी	:	पत्नी
राजीव	:	पुत्र
संजीव – ज्योति	:	पुत्र - पुत्रवधु
शेखर – सुजाता	:	पुत्र - पुत्रवधु
नमन, अंकित, साक्षी ,अनन्या, कार्तिक	:	पोते -पोती

व समस्त परिजन एवं बांधव

निवास: C-830 A, Sector-C, H - Road, Mahanagar, Lucknow -226006 ;
दूरभाष – 9818504542 (संजीव चतुर्वेदी)

मनोबल ही समाधान

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

लॉक डाउन खत्म हो गया। आज आंफिस नहीं जाना ? पत्नी ने कहा तो पति बोला- कहां -आफिस ? काफी प्रयास के बाद पति आफिस चला तो पत्नी रोने लगी -- अरे,घर में अकेले ही मेरा मन नहीं लगेगा। यह कपोल-कल्पित हो सकती है, लेकिन कोरोना के बाद हर कोई अजीब सी उलझन में लगता है। चाहे वो कोरोना से पीड़ित हो या फिर कोरोना से बच गया हो। सभी हाथ धोते-धोते डरते हैं, पता नहीं कब जिंदगी से ही धोना पड़ जाए। कोरोना की पहली लहर हो या दूसरी लहर या तीसरी लहर की शंका चारों तरफ भय या असुरक्षा के वातावरण में न जाने-- "कब, क्या, क्यो, कहां, कैसे" - की परिस्थितियां पैदा हो जाए ? कोई नहीं जानता और नहीं समझता है। इस ऊहापोह में सभी लोग मानसिक उलझनों की गिरफ्त में फंस गए हैं। चार साल का बच्चा, चौबीस साल का जवान, चालीस साल का अधेड़ या साठ साल का प्रौढ़ या अस्सी साल का का बुजुर्ग हो किसी न किसी समस्या, भय, चिंता, असुरक्षा, असहनशीलता के भ्रमजाल में फंसकर सबका मनोबल टूटा हुआ लगता है। यदि किसी से इसका कारण पूछो तो झुंझला कर बोलता है कि "परेशान मत करो, तुम नहीं समझोगे। यह कोरोना काल की ही बात नहीं है बल्कि 70 के दशक से ही भारत में मनोरोग फैशन की तरह ही फैलता जा रहा है। इन्ही मानसिक उलझनों एवं असमंजस के कारण सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना में भी टकराव की स्थिति बन गई है।

मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. नाथ से चर्चा के दौरान बढ़ते हुए तनाव एवं अवसाद का कारण जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि किसी ने कहा है...Adjustment thy name is Life अर्थात हमारी जिंदगी आपस में सामंजस्य स्थापित करके ही सफलता पूर्वक चलती है। कर्मण्ये वाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचना की भावना से परिवार में बुजुर्ग की बात पर कोई सवाल नही उठाता था बल्कि पूरी जिम्मेदारी से आदेश मानकर पालन करते थे। सही या गलत परिणाम की जिम्मेदारी बुर्जुग लेता था। दोनों ही स्पष्ट नीति व नियति के कारण खुश रहते थे। समाज में भौतिकता के बजाय अध्यात्मिकता की प्रमुखता थी, हुए वहीं जो राम रचि राखा के भाव से व्यक्ति को जो भी मिलता या नहीं मिलता था। उसी में संतुष्ट होकर खुश रहता था। आपस में होड़ का सवाल ही नही था। व्यक्ति जिम्मेदारी से मेहनत करता, रुखा-सूखा खाता, आनंद के भाव से जीता तो पत्थर पर भी चैन से सोता था। तनाव या अवसाद या मनोरोग क्या होता है, किसी को जानकारी ही नहीं होती थी। भौतिकवाद के प्रभाव से आधुनिक जीवनशैली में सुख-समृद्धि ही जीवन का लक्ष्य हो गया है। दिनचर्या में संतुष्टि

व संतुलन की जगह असंतोष व असंतुलन का प्रचलन बढ़ रहा है। आपसी होड़ के कारण अभाव व असंतुलन के लिए निकटवर्ती लोग ही जिम्मेदार लगते हैं। इससे आपस में विद्वेष बढ़ता है। हर व्यक्ति अपनी हैसियत से अपने मान–अपमान का एहसास करने लगा है। अहम ब्रह्मास्मि का भाव था कि अपने अहम को ब्रह्म (समाज) में विलीन कर दो, लेकिन आधुनिक युग में लोगों ने ब्रह्म को अपने अहम में विलीन कर लिया। मैं ही सच हूं, मैं ही सर्वोत्तम हूं, व्यक्तित्व का परिचय बन गया है।

शिक्षा एवं व्यवसाय के कारण लोगों को पारिवारिक बंधनों को छोड़कर मूल स्थान से दूर रहने को मजबूर होना पड़ा है। अब विपरीत परिस्थितियों के आने पर व्यक्ति अपने को अकेला पाता है। न तो कोई सलाह देने वाला और न कोई सहयोग करने वाला मिलता।

फलस्वरूप व्यक्ति के अंदर भय व असुरक्षा की भावना घर कर जाती है। जिससे उसके लिए पराजय व असहनशीलता का विचार तनाव या अवसाद का कारण बन जाता है। अब व्यक्ति को अकेलापन एवं अभाव ही जीवन का सहारा लगने लगता है। इससे तनाव एवं अवसाद को फलने – फूलने का मौका मिल जाता है।

प्रायः लोग विपरीत परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हुए अपनी दिनचर्या जारी रखते हैं,किन्तु कुछ लोग तनाव एवं अवसाद से पीड़ित हो कर मनोबल टूटने से मनोरोग से ग्रस्त हो जाते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार सन 70 से 80 तक मनोरोगियों में पांच प्रतिशत की वृद्धि हुई। तो सन 2000 तक दस प्रतिशत की वृद्धि हुई, लेकिन उसके बाद प्रतिवर्ष पांच प्रतिशत की वृद्धि हो रही है।

डॉ. नाथ ने बताया कि एक करोड़पति व्यापारी मेरे पास परामर्श के लिए आए, जो अपनी मां की मृत्यु के बाद अवसाद से पीड़ित थे। मैंने उनसे किसी मित्र को तुरंत बुलाने को कहा तो वो असमंजस में पड़ गये। तब मैंने उनसे पत्नी को बुलाने को कहा, लेकिन उनकी कोशिश नाकाम रही। फिर उन्होंने अपने कर्मचारी को बुलाने को पूछा, तो मैंने इंकार कर दिया। उसके बाद एक महीने की दवाईयां लिखकर उनको पुराने मित्रों से मिलने को कहा। चार महीने के इलाज के दौरान ही उन्होंने सोशल मीडिया पर छात्र जीवन के दो मित्रों को ढूंढ़ लिया। आज भी वो मानते हैं कि दवाई से ज्यादा दोस्तों ने उपचार किया।

महामारी कोविड –19 को दो लहरों से मची त्राहि–त्राहि से देश की लगभग दो प्रतिशत आबादी ही बीमारी से ग्रस्त हुई, लेकिन एक सर्वे के अनुसार कोविड की दहशत से मनोबल टूटने के बाद लगभग दस प्रतिशत से अधिक आबादी तनाव एवं अवसाद से पीड़ित हो गई। कोरोना ने "पांजिटिव" शब्द को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया है, आज इस शब्द का कितना "निगेटिव" प्रभाव है,उसका वर्णन शब्दों से परे है।

डॉ नाथ के कुछ डाक्टर साथी हमारी परिचर्चा में शामिल हो गए, इंजेक्शन,आक्सिजन या दवाईयों की कमी से तो त्राहि–त्राहि मची थी, लेकिन आपातकालीन स्थिति बनने का कारण उसकी तुलना में लोगों के टूटे मनोबल से उपजी दहशत एवं असुरक्षा का भाव था। कोविड मरीजों की मनोस्थिति में असंतोष, असुरक्षा के कारण उनका मनोबल खत्म सा हो गया था अन्यथा अस्सी प्रतिशत मरीजों को अस्पताल की जरुरत ही नहीं थी। नकारात्मक मनोस्थिति के कारण मनोबल टूटने से उत्पन्न पराजय एवं भय से जीवन की सार्थकता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है, व्यक्ति अकेलेपन व असंतोष का शिकार होकर मनोरोगी बन सकता है। सभी डाक्टर इस विषय पर एकमत थे।कोरोना के नकारात्मक प्रभाव के कारण एवं निवारण पर परिचर्चा के बाद डॉ नाथ बोले हमको अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए कोरोना के भय एवं असुरक्षा या असंतोष को दूर करने के लिए व्यावहारिक उपाय बताने होंगे :–

1– हमें प्राकृतिक एवं अनुशासित जीवन जीना होगा---- जैसे उत्तम स्वास्थ्य के लिए सुबह सूर्योदय के समय धूप में व्यायाम तथा प्राणायाम करना,स्वच्छता के साथ सात्त्विक भोजन के नियमों का पालन करना।

2– जिंदगी में किसी भी भय या असुरक्षा से पलायन न करके डटकर मुकाबला करते हुए अपने सकारात्मक सोच के साथ जीवन में संतुष्टि व संतुलन बनाए रखना है।

3– जिंदगी में किसी से अपनी तुलना नहीं करें बल्कि अपने ही संसाधनों के साथ ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए योजनाबद्ध व समयबद्ध परिश्रम करें, अनुकूल या प्रतिकूल परिणाम को भगवान की कृपा मानकर शिरोधार्य करें।

4– संपर्क एवं संवाद ही जिंदगी में जिंदादिली के मूल मंत्र है, यदि वास्तविकता में संभव न हो तो फोन से ही पारिवारिक सदस्यों, रिश्तेदारों, निकटवर्ती लोगों विशेषकर दोस्तों से संपर्क एवं संवाद बनाए रखे, इससे अकेलापन तथा असुरक्षा का एहसास नहीं होता।(ओहियो यूनिवर्सिटी, अमेरिका के डां जिनिस तथा डॉ रोनाल्ड ने एक शोध कर जाना कि जो लोग सप्ताह में एक बार भी सामाजिक गतिविधियों में शामिल होते है,वे उन लोगों से सुखद, स्वस्थ एवं लम्बा जीवन जीते हैं,जो सामाजिक क्षेत्र में सर्वथा निष्क्रिय रहते हैं।) हमारी मानसिक शांति एवं प्रसन्नता किसी भी बाह्य कारण की मोहताज नहीं है। जीवन की सारी भागदौड़ अपने लिए फील गुड फैक्टर प्राप्त करने के लिए हैं,जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने सकारात्मक मनोबल ऊंचा रखकर ही प्राप्त कर सकता है।

एक कर्त्तव्य -'अंतिम संस्कार '

- चित्रा चतुर्वेदी, बीमा कुंज, भोपाल
मो. : 9425303470

जन्म से मृत्यु के बीच हिन्दू धर्म में 16 संस्कार माने जाते हैं। हरसंभव प्रयास होता है कि सभी संस्कार पूरी तरह से माने और मनाये जाएं। ध्यान दें तो इन 16 में से 14 संस्कारों में हम खुद शामिल होते हैं,जबकि दो संस्कार पहला (जन्म) और आखरी (मृत्यु),हमारे लिए हमारे अपने करते हैं। पहले ,यानि जन्म संस्कार में तो अक्सर हमारे बड़े शामिल होते हैं और इस पर खुलकर बातचीत सभी के बीच होते है अतः यह पूरे उत्सवपूर्ण माहौल में होता है। किन्तु, बात जब अंतिम संस्कार की होती है तो उससे जुड़ी भय और दुःख की भावनाएं न तो इस पर ज्यादा बातचीत करने देती है और न ही इस पर जानकारी हमारी अगली पीढ़ी तक ठीक से पहुँच पाती है।

नतीजा हम सब देखते हैं। कभी सिर्फ 'कर्त्तव्य' मानकर इसे निभा दिया जाता है तो कभी शॉर्टकट ढूंढ कर 'निपटा' दिया जाता है। 'निभाने' और 'निपटाने' के बीच भावनायें तो होती हैं पर शास्त्रसम्मत विधियां और विज्ञानपरक क्रियाएं किनारे हो जाती हैं। आज इस लेख से मेरी कोशिश है कि उस "अंतिम संस्कार" पर भी कुछ जानकारी साझा हो। यद्यपि परिवारों में काफी तरीके एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं,पर आधारभूत सनातन हिन्दू धर्म में होने वाली क्रियाएं और कारण समान ही हैं, तो शुरुआत इंसान के अंतिम सांस ले लेने के बाद से करते हैं। क्या होता है? क्यों होता है? मान्यताएं क्या हैं? सर्वप्रथम हम देखते हैं कि वह व्यक्ति जो घर पर है और मरणासन हैं, उनके लिए कल्याणकारी कर्म क्या किया जा सकता है।

सर्वप्रथम भूमि को गोबर से लीप कर उस पर तिल,घास और कुश बिछा कर उस पर मरणासन्न व्यक्ति को लेटा देना चाहिए। उसके मुख में पंचरत्न, स्वर्ण आदि डालने से माना जाता है कि पापों का नाश होता है। मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगाजल एवं तुलसीदल भी रखना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के पास बैठ कर कोई भी व्यक्ति शोक न मनाये, इससे मरणासन्न व्यक्ति को देह छोड़ने में कष्ट होता है। सबसे आवश्यक है इस स्थान पर भगवान का नाम लेना और गीता पाठ करना। धूप, अगरबत्ती जला कर उस स्थान को सुगन्धित धुएं से पवित्र करते रहना चाहिए, इससे अपवित्र या पापी आत्मायें दूर रहती हैं।

अंतिम यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति से सामर्थ अनुसार दान कराना भी बहुत पुण्यदायी होता है। ऐसा माना जाता है कि लोहा दान करने से जीव यम की नगरी में नहीं जाता है। सोना दान करने से यम, ब्रम्हा आदि बहुत प्रसन्न होते हैं। रुई के वस्त्र दान करने से यमराज बहुत प्रसन्न होते हैं। सात अनाजों के दान से यमलोक पर तैनात द्वारपाल प्रसन्न होते हैं। फसल से युक्त भूमि का दान करने से जीव को इंद्रलोक की प्राप्ति होती है। इस समय गौदान की भी परंपरा है। ऐसी मान्यता है की गाय की पूँछ पकड़ कर ही जीवात्मा वैतरणी नदी पार करती है।

मरणासन्न व्यक्ति के दोनों हाथों में कुश रखना चाहिए इससे प्राणी विष्णुलोक को प्राप्त करता है। इन सभी बातों का ध्यान रखने से जीवात्मा की अंतिम यात्रा शांतिपूर्वक होती है। जिस समय व्यक्ति की मौत होती है। उस समय घर का माहौल अत्यंत शोकाकुल हो जाता है। कहते हैं इस समय विलाप न करते हुए भगवान का नाम,मंत्र एवं जाप को प्राथमिकता दें। इससे आत्मा के लिए शांति से देह त्याग अपनी यात्रा पर जाना आसान हो जाता है।

मृत्युपरांत शव-संस्कार आरम्भ होता है। शव को स्नान करवा के ,घी-चन्दन का लेप करके ,नए वस्त्र पहनाये जाते हैं। फूल और तुलसी की माला पहना,मुख में सोने का टुकड़ा भी डाला जाता है। अर्थी बना उस पर कुश आसन बिछाया जाता है। उस पर मृतक को लिटाकर नए वस्त्र (कफ़न) से सर से पाँव तक ढँक कर मौली/सुतली से बाँधा जाता है। कहीं कहीं अर्थी पर राम नामी चादर ओढ़ाने का भी चलन है। इसके पश्चात् मृतक को फूल,माला एवं पुष्प उसके परिजन चढ़ाते हैं। सौभाग्यवती महिला की मृत्यु होने से उसे लाल चुनरी/लाल वस्त्र और सोलह श्रृंगार कर, दोनों हाथों में लड्डू रख कर विदा करते हैं।

मृतक का बड़ा बेटा श्राद्ध कर्म करता है। स्नान कर,धुले वस्त्र धारण कर दाह संस्कार के लिए तैयार होता है। ऐसा देखने में आया है कि पुरुष शव को बाँधने के लिए मूँज कि मौली-सुतली और सौभाग्यवती महिला के शव को मौली से बाँधा

जाता है। मृतक को उठाने से पहले मिटटी हांडी में अग्नि तैयार की जाती है, जो शवयात्रा में अर्थी के आगे एक व्यक्ति इसे पकड़ कर चलता है। अर्थी उठाने के पूर्व सभी परिजन इसकी परिक्रमा कर फूल,माला,अबीर आदि अर्पित कर अंतिम बिदाई देते हैं। कहीं कहीं सौभाग्यवती महिला पर शॉल ,साड़ी,सुहाग का सामान चढाने की भी प्रथा है।

अर्थी उठाने के पहले पंडित या जानकार बाँधव कुछ पूजन भी करवाता है (पिंड दान आदि) और चार व्यक्ति राम धुन की आवाजें देते हुए ,अर्थी उठा उसे अंतिम यात्रा पर ले जाते हैं। घर, परिवार, गाँव, कॉलोनी वाले मृतक के साथ कुछ कदम चल कर उसे अपना अंतिम प्रणाम देते हैं।इनमें से कुछ व्यक्ति वापस आ जाते हैं और कुछ शवयात्रा में शमशान घाट तक जाते हैं। पार्थिव शरीर का दाह संस्कार ज्यादा विलम्ब से करना उचित नहीं होता है, किन्तु मनुष्य काल–परिस्थितियों से बंधा हुआ है। पार्थिव शरीर ले जाते समय उसका सर आगे और पाँव पीछे रखे जाते हैं। फिर विश्राम स्थल पर मृत देह को एक वेदी पर रखा जाता है इसलिए कि अंतिम बार व्यक्ति इस संसार को देख ले। इसके बाद देह कि दिशा बदल दी जाती है।

कई स्थानों पर संस्कार के लिए अग्नि घर से ले जाने कि प्रथा है। यदि वहीँ व्यवस्था करनी है तो वह इंतजाम भी रखें। अंत्येष्टि संस्कार के साथ पांच पिंड–दान किये जाते हैं। जीवात्मा की शांति के लिए कुछ क्रियाओं का करना आवश्यक है। पिंड–दान भी इसमें से एक है।

प्रथम पिंड, घर के अंदर शव संस्कार करके संकल्प के बाद दान किया जाता है।दूसरा पिंड–दान शवशैया पर शवस्थापना के बाद किया जाता है। तीसरा पिंड मार्ग पर दिया जाता है,यह मृतक के पेट पर रखा जाता है। चौथा पिंड–दान शमशान में करते हैं,इस पिंड को छाती पर अर्पित करते हैं।पांचवा पिंड–दान चितारोहण के बाद करते हैं,यह मृतक के सर पर रखते हैं।

भूमि संस्कारः शमशान घाट पहुँच कर शव को उपयुक्त स्थान पर रखें और पिंड दें।

चिता वाला स्थान झाड़ बुहार कर साफ़ करें। इस स्थान को मंत्र जाप करते हुए जल से सिंचन करें और गोबर से लीप कर स्वच्छ बनाया जाता है। चिता सजाते समय मंत्रोच्चार के साथ धरती मां से श्रेष्ठता के संस्कार मांगते हैं।

शमशान भूमिः यहाँ सिद्धियां निवास करती हैं। दाग देने वाले को चाहिए कि भूमि को प्रणाम कर वहां रहने वाली समस्त शक्तियों को प्रणाम करे। इसके पश्चात पूजन विधि कर चिता को अग्नि दें।दाह संस्कार के समय सामूहिक प्रार्थना का अपना महत्त्व होता ही है। सामूहिक प्रार्थना कपाल क्रिया पूर्ण होने तक करनी चाहिए। कपाल क्रिया के बाद कुछ लोगों को छोड़ शेष सभी व्यक्ति घर लौट जाते हैं। शेष व्यक्ति चिता पूर्णतः जलने के बाद लौट जाते हैं।

गरुण पुराण में कहा गया है, जिस व्यक्ति का अंतिम संस्कार नहीं होता उसकी आत्मा प्रेत बनकर भटकती रहती है और अपार कष्ट पाती है। दाह संस्कार करने का कारण यही है की मृतात्मा को मोक्ष प्राप्त हो। जिन लोगों के मृत्योपरांत शव प्राप्त नहीं होते। उनका पुतला बनाकर दाह–क्रिया की जाती है। इस विधि को नारायण बलि के नाम से भी जाना जाता है। अकाल मृत्यु आदि में भी नारायण बलि द्वारा दाह क्रिया करने का नियम है। दाह क्रिया के पश्चात लोग घाट पर स्नान कर घर जाते हैं। शमशान से जब व्यक्ति घर वापस आते हैं तो घर के दरवाजे पर ही उनके हाथ पैर धुलवा,नीम चबाने को दी जाती है। यह नीम पत्ती थोड़ी सी चबा कर थूक दी जाती है। फिर कुल्ला कर घर में प्रवेश किया जाता है। शमशान से घर वापस आने के बीच के समय में महिलाएं घर की साफ़ सफाई करती हैं। वहां पड़े फूल, गुलाल आदि को पुराने कपड़े से साफ़ किया जाता है। मृतक के उतारे कपड़े, बिस्तर आदि घर के बाहर रख दिया जाता है। जिन्हें बाहर कार्यरत कर्मचारी उठा कर ले जाते हैं।

प्रथम से तीसरे दिन तक भोजन में काली उड़द दाल या काले साबुत उड़द का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है। भोजन में हल्दी और बघार (छोंक) का प्रयोग वर्जित है। इन दिनों भोजन घर की बहुएं ही बनाती हैं। बहन–बेटियां इस भोजन को तैयार करने में कैसी भी मदद नहीं कर सकतीं। सब्जी भी बिना छौंक ही बनाई जाती है। मृतक के घर में भोजन दिन में ही बनता है। रात्रिकालीन भोजन परिचितों के घर से बन कर आता है।

पहले दिन से ही पहली थाली मृतक के नाम पर निकलती है जो गाय को खिलाई जाती है। गाय की थाली में पर्याप्त भोजन और लोटे में जल भेजा जाता है। यह थाली तेरहवी के दिन तक निकाली जाती है। गाय के भोजन करने के पश्चात ही घर के सदस्य भोजन करते हैं।

सूतक के 10 दिनों में घर में पूजा पाठ बंद कर दिया जाता है और इसी दौरान पहले दिन की शाम से ही घर में एक दीपक प्रतिदिन मृतक के नाम का जलाया जाता है। एक और दीपक घर के पुरुष प्रतिसंध्या अगले 10 दिन तक पीपल वृक्ष के नीचे मृतक की आत्मा शांति हेतु जलाया जाता है। शाम का भोजन गाय को नहीं दिया जाता है।

दूसरे दिन कोई विधि नहीं की जाती है, पुराने समय में केवल दोपहर के भोजन की थाली मृतक के नाम से निकाली जाती थी,परन्तु आज के समय में सुबह की चाय एवं मृतक की पसंद का नाश्ता भी निकला जाता है। यह क्रम 13वी तक चलता है।

तीसरे दिन घर के पुरुष सुबह के समय चिता से अस्थि चुनने जाते हैं। यह अस्थियां चुन कर, दूध पानी से धोकर ,किसी मटकी में रख कर बंद कर दिया जाता है। फिर इसे अपनी सुविधानुसार किसी पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। पवित्र नदी जैसे गंगा में अस्थि विसर्जन के पीछे महाभारत की एक मान्यता है कि जितने समय तक गंगा में व्यक्ति की अस्थि पड़ी रहती है व्यक्ति उतने समय तक स्वर्ग में वास करता है।पवित्र नदियों में अस्थि विसर्जन का मुख्य कारण यही है कि मृत व्यक्ति अपने द्वारा किये गए पापों से मुक्त हो जाता है और उसे स्वर्ग कि प्राप्ति होती है।

तीसरे दिन के दोपहर के भोजन में पकोड़ी का झोर ,साबुत उड़द,चावल,रोटी और सब्जी बनती है। भोजन में छौंक और हल्दी का प्रयोग नहीं होता है। इस दिन के भोजन में एक अलग तरह का हलुआ बनता है, जो तीन दिन के बचे परोथन को मिलाकर तेल में बनाया जाता है। यह हलुआ जिन लोगों के पिता जीवित नहीं हैं,केवल उन्हें ही खिलाया जाता है। आज के समय में यह हलुआ मुख्यतः गाय को खिलाया जाता है।

तीसरे दिन से गरुण पुराण का पाठ भी बैठाया जाता है। यह पाठ एक हफ्ते चलता है,इस पाठ कि मान्यता है कि इससे मृत आत्मा को शांति और मोक्ष मिलता है। हमारे मन में कई सवाल आते हैं,मृत्यु के बाद इंसान के अस्तित्व का क्या होता है? वो कहाँ जाता है आदि। ऐसे सभी सवालों का जवाब गरुण पुराण में मिलता है। चौथे से नौवे दिन तक कोई विधि अलग से नहीं निभाई जाती। दसवे दिन सूतक उतारा जाता है। पुरुष, घाट या किसी मैदान आदि में जाकर बाल,दाढ़ी आदि का मुंडन करवाते हैं। जो मुंडन नहीं करवाते वह कटिंग करवाते हैं। इसमें नाखून आदि कटवाना भी शामिल है। इस दिन घर कि महिलाएं घर कि सफाई करवाती हैं। घर के परदे,चादर,तकिया खोल आदि बदला जाता है। जहाँ यह सब काम करने वाला कोई नहीं होता वहां सम्पूर्ण घर और सामान पर गंगाजल छिड़क दिया जाता है।

मुंडन कराने के साथ कि भावना यह है कि मृत व्यक्ति के प्रति हम अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त कर रहे हैं। दूसरा कारण है कि इस तरह हम अपने शरीर को किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचने के लिए साफ़ और शुद्ध कर लेते हैं। इस दिन दोपहर के भोजन में चावल नहीं बनता है|कई घरों में इस दिन दोपहर का भोजन रिश्तेदारों के घर से आता है। 10वे दिन शाम को जलने वाले दिए बदल दिए जाते हैं या दिया जलाना बंद कर देते है। कहीं कहीं गरुण पुराण की जगह गीता पाठ किया जाता है। यह पाठ घर कि बेटियां भी कर सकती हैं।

11वे दिन को एकादशा या उठावना भी कहते हैं। इसमें सुबह घर के पुरुष मृतक का उपयोग किया सामान जैसे कपडे,बिस्तर, लिहाफ,स्वेटर आदि दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं साबुन, कंघा, ब्रश आदि ले कर घर से घाट या किसी मैदान/बगीचे में जाते हैं वहां पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ के ये पूजा करते हैं। इस पूजा को कर्मकांडी ब्राह्मण ही कराता है। मृतक के पसंद का भोजन,चाय,दूध,घर से बना कर भेजा जाता है या बाजार से ही भोजन खरीदा जाता है। यह सभी सामान और भोजन कर्मकांडी ब्राह्मण को दिया जाता है। इस दिन कि पूजा में पिंड दान के साथ मृत आत्मा को पितरों के बीच स्थान दिया जाता है या यूँ भी कह सकते हैं कि मृतात्मा को पितरों में मिला दिया जाता है। 11वे दिन से घर में सामान्य रूप से आवागमन आरम्भ हो जाता है। जब पुरुषवर्ग उठावना करके घर आते हैं तो परिवार और खानदान के लोगों के साथ पूड़ी सब्जी आदि का भोजन करते हैं। घर में भोजन सामान्य विधि अनुसार बनता है। तेल,हल्दी,छौंक आदि सब का प्रयोग आरम्भ हो जाता है। गाय की थाली निकलना जारी रहता है।

बचपन से सुना है औरतों का बारहवा होता है और पुरुषों कि तेरहवी होती है। यह रिवाज गांव के हिसाब से बदल भी जाता है। जैसे औरतों का काम ग्यारहवें दिन और पुरुषों का काम बारहवें दिन करते हैं। इस काम में सभी लोग सुबह स्नान आदि करके पंडित कि मदद से घर में पूजन हवन आदि करते हैं। इसके पश्चात ब्राह्मण भोज कराया जाता है।यह भोज १३ ब्राह्मणो को कराया जाता है। तत्पश्चात उन्हें पद दे कर विदा किया जाता है। पद के सामान में पुरूषों के 5 कपड़े (धोती,कुरता, बनियाइन,रुमाल और गमछा), इसी प्रकार महिलाओं के भी 5 वस्त्र किये जाते हैं, इस सामान में पद का लोटा,बड़ा लड्डू, तुलसी कि माला, धार्मिक पुस्तक जैसे गीता, सुन्दर काण्ड , छाता, छड़ी, चप्पल, सिक्का या रूपए के साथ ऐसे १३ समान पद में दिये जाते हैं। ऐसे 13 पद दिए जाते है। कहीं कहीं सुविधानुसार 1 पद पूरा और और बाकी के आंशिक भी किये जाते हैं। यह पद हम जिसे १३वी का भोजन करा रहे हैं उन्हें या १३वी का पूजन–हवन कराने वाले मुख्य ब्राह्मण को भी दे सकते हैं। फिर सभी ब्राह्मणो को श्रद्धापूर्वक दक्षिणा देकर विदाई दी जाती है। ध्यान रखना है कि दागिहा व्यक्ति को ब्राह्मणो के साथ भोजन करने अवश्य बैठाया जाता है, किन्तु इसे १३ ब्राह्मणो कि गिनती में नहीं गिना जाता। ब्राह्मण के रूप में भांजे–भांजी को खिलाना विशेष है।

हमारे समाज में एक चलन है कि १३वी के दिन पूजन,हवन,ब्राह्मण भोज और रिश्तेदारों आदि के भोजन के बाद शाम के समय आँखें धुलवाई जाती हैं। इस प्रथा में घर कि सभी महिलाएं एक स्थान पर एकत्रित होती हैं और घर कि बहन–बेटी एक पात्र में जल लेकर सबके सामने जाती हैं, जिसके सामने जाती हैं वह महिला दो ऊँगली उस जल में डूबकर

अपनी आँखों में लगा लेती हैं। इस प्रथा के पीछे छिपी भावनाएं हैं कि आज से हमारे घर में शोकाकुल वातावरण के आंसू हम पोंछ रहे हैं और भविष्य में शोक और गम के आंसू हमारी आँखों में कभी न आएं। हे भगवान शोक और गमी से हम सब कि रक्षा करना। इसके पश्चात घर के सभी सदस्य मंदिर जाकर भगवान् के दर्शन करते हैं। इस प्रकार मृत्युपरांत १३ दिनों के काम और विधियां समाप्त होती हैं।

अब बरसी होने तक रोज दिन में मृतात्मा के नाम का भोजन और पानी गाय को खिलाया जाता है। महीने की प्रत्येक अमावस्या को एक ब्राह्मण भी मृतात्मा के नाम का जिमाया जाता है,जो लोग सालभर थाली नहीं निकाल पाते वे अमावस्या को ब्राह्मण भोज करा कर उसे एक मास का सीदा/राशन दे देते हैं। दीवाली की अमावस्या सबसे बड़ी अमावस्या (काल रात्रि) मानी जाती है। मृत्योपरांत पहली दिवाली मृतात्मा के नाम से मनाई जाती है। इसके अंतर्गत छोटी दिवाली की रात रसोईघर को साफ़ कर ब्राह्मण और परिवारजनों के लिए भोजन बनता है। इसमें विशेष महत्व पुआ का होता है। ९ पुए बना कर घर बंद करते समय ,घर कि बाहरी देहरी पर किसी बर्तन में रख कर तवा उल्टा करके ढक दिए जाते हैं। ब्रम्ह मुहूर्त में घर के लोग इसकी विधि पूरी करने निकल जाते हैं। ये पुए ३-३ करके जल,थल और नभ के माने जाते हैं। जैसे ३ पुए किसी नदी या तालाब में विसर्जित किये जाते हैं। ३ पुए किसी मुंडेर पर गगनचर (पक्षी) जैसे चिड़यि-कौओं के खाने के लिए रख दिए जाते हैं। 3 पुए थल/पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों जैसे गाय आदि को खिला दिए जाते हैं। घर के लोग इस प्रक्रिया को पूरा कर हाथ पाँव धो,कुल्ला कर के घर में घुसते हैं। अब दिन में ब्राह्मण को पूड़ी,पुआ,सब्जी,मिठाई का भोजन करा,घर वाले भी यही भोजन ग्रहण करते हैं और यह रस्म यहीं समाप्त हो जाती है।

वर्ष भर में महिलाओं की ग्यारह और पुरुषों की 12 अमावस्या खिलाई जाती है। कहीं कहीं तो अंतिम अमावस्या के साथ ही बरसी भी कर दी जाती है तो कुछ लोग अंतिम अमावस्या पर ब्राह्मण/ब्राह्मणी को भोजन करा के वस्त्रादि दान कर विदा कर देते हैं। इस रीति को उठनी कहते हैं और बरसी की तिथि आने पर करते हैं। बरसी के दिन सुबह से परिवार के सभी सदस्य स्नान कर शुद्ध हो कर पंडित द्वारा कराये जा रहे पूजन-हवन में भाग लेते हैं। यह दिन भी मृतक और पूर्वजों के निमित्त होता है। हवन, आरती संपूर्ण होने के बाद भोजन कि पांच पत्तल निकली जाती हैः गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी के लिए।

अब बारी आती है ब्राह्मण भोज की , बरसी के दिन 12 ब्राह्मण जिमाये जाते हैं और इन्हे जीमने के बाद पद दिए जाते हैं।मृतक की बरसी करने के बाद ही उसका वार्षिक एवं तिथि श्राद्धः करना आरम्भ करते हैं।बरसी के बाद ही घर में मांगलिक कार्यों कि शुरुआत होने लगती है।

मृतक के चार वर्ष पूर्ण होने पर चौबर्सी करने की प्रथा है। चौबर्सी के दिन भी पंडित द्वारा पूजन-हवन पिंड दान की प्रक्रिया पूर्ण कराई जाती है। फिर वही 5 पत्तल में गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी के लिए निकाल कर उन्हें देते हैं।

चौबर्सी पर चार ब्राह्मण जिमा कर उन्हें पद आदि देकर विदा करते हैं। और अब मृतक के नाम के बस श्राद्ध कर्म उनकी तिथि पर किये जाते हैं।

कुछ बातें स्मरणीय हैं:

1. सामान्यतः दाह संस्कार सूर्यास्त के बाद नहीं किया जाता है।
2. सन्यासी-महात्माओं के लिए मृत्युपश्चात भूमिसमाधि या जलसमाधि देने का विधान है।
3. मृत्यु को विलक्षण और भयावह न समझें, यह आत्मा कि मुक्ति के लिए आवश्यक है। गरुण पुराण में कहा गया है कि शास्त्र सम्मत विधि से ही अंतिम संस्कार होने से और शेष विधियां 13 दिन कि पूर्ण होने से मृतक कि आत्मा को मुक्ति ,मोक्ष और शांति मिलती है।
4. तेरहवी,बरसी और चौबरसी पर ब्राह्मण भोज के पहले भोजन के 5 भाग गाय,कुत्ता,कौआ,अग्नि और भिखारी का भोजन निकाल उन्हें देना आवश्यक है।
5. तेरहनवी, बरसी और चौबर्सी के हवन के पूर्ण होने पर हवन कि अग्नि तुरंत ठंडी करके इसकी राख आदि जल में प्रवाहित कर दी जाती है।

हवन-पूजन के समय मृतक कि फोटो पर फूल माला टीका लगा कर वहां रखें।

परिस्तिथि जन्य समय में 13 दिन के मृतक के काम/विधि 3 या 4 दिन में ही पूरे कर दिए जाते हैं यानी तीसरे दिन अस्थि विसर्जन के बाद चौथे दिन ही तेरहंवी,बरसी और चोबरसी एक साथ कर दी जाती है।

देखने में आता है यह विधि अब परिस्तिथि जन्य कम स्वेक्छिक रूप से ज्यादा जोर पकड़ रही है। मेरा मानना है कि यह कर्म दिनों और विधि के हिसाब से पूरा किया जाये जिससे हमारे बच्चे हमसे इन विधियों को देखें,सीखें और समझें। जीवन है तो मृत्यु भी अटल सत्य है,हम भी चाहेंगे कि मृत्यु पश्चात हमारे काम भी पूर्ण शास्त्र सम्मत तरीके से हों। यह लेख मेरे लिए संभव नहीं था ,अगर समाज की बुज़ुर्ग बहिनों से जानकारी न मिलती। उन सब को आभार के साथ आशा करती हूँ कि इस लेख से अंतिम संस्कार और उसके पीछे मौजूद तथ्यों को समझने में मदद मिलेगी।

अंतिम संस्कार में ध्यान रखने वाली बातें

- **शारदा चतुर्वेदी**, भोपाल

1. मरणासन्न व्यक्ति को जमीन पर लिटाते वक्त उसका सर उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।

2. सामान्यता दाग देने वाला व्यक्ति दाह संस्कार से पूर्व बाल देता है व परिवार के अन्य परिजन शुद्धि के दिन बाल देते हैं। शुद्धि के दिन दाग देने वाले के भी दोबारा बाल दिए जाते है।

3. दाग देते वक्त, अस्थि संचय के समय एवं एकादशी पूजन के दिन दाग देने वाला व्यक्ति उल्टा जनेऊ पहनता है अर्थात सीधे करने से विधि के उपरांत उसे सीधा कर दिया जाता है अर्थात बाएं कंधे से।

4. गंगा किनारे या अन्य मोक्षदायनी नदी किनारे दाह संस्कार दिन रात होते हैं।

5. शुद्धि तक शाम का खाना रिश्तेदारों के घर से आने की प्रथा है। ऐसा नहीं होने पर सुबह ही अधिक मात्रा में शाम के लिए भी खाना बना लिया जाता है या बाहर से भी मंगाने में कोई दोष नहीं है।

6. सुहागिन महिला के पद में तुलसी की माला और सफेद चंदन का टुकड़ा नहीं रखा जाता है।

7. तेहरबी के पद में तेरह सामान होते हैं।

9. भावना वश दाग देते समय अन्य परिजन भी उसमें अपना हाथ लगाते हैं, लेकिन आगे के कर्म वही व्यक्ति करता है जिसने कपाल क्रिया की हो, अर्थात दगिया वही कहलाता है जिसने कपाल क्रिया की हो।

10. दगिया को 13 दिन पूर्णता ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। घर से बाहर निकलते वक्त कोई भी लोहे की वस्तु आवश्यक रूप से जेब में रखें और संभव हो तो घर पर अकेले बाहर ना जाएं किसी के साथ जाएं।

11. जिस व्यक्ति को मासी के दिन (तिथि या अमावस्या) भोजन के लिए बिठाया जाता है। उसे भी तेहरवीं के ब्राह्मणों के साथ खिलाया जाता है, परंतु उसे 13 ब्राह्मणों में ना गिन कर अलग से बिठाया जाता है। उसे पद भी नहीं दिया जाता है। उसकी विदा उठनी के दिन होती है।

12. मृतक के सिरहाने मिट्टी का दिया जलाया जाता है जलाने के लिए सिर्फ तेल का उपयोग किया जाता है मृतक के उठने के साथ ही उसे हटा दिया जाता है। घी का दिया खुशी का प्रतीक होता है।इसलिए घी का दिया नही जलाते।

13. ब्राह्मणों के रूप में घर की बेटी भांजी भांजे को खिलाना में प्राथमिकता दी जाती है। सामान्यता सुहागिन महिला में सुहागिन महिला ही ब्राह्मण के रूप में खिलाई जाती हैं। पुरुषों और विधवा स्त्रियों के ब्राह्मण के रूप में घर के मान्य व पुरुष ब्राह्मण खिलाए जाते हैं। बाकी जिसकी जैसी मान्यता हो।

14. यदि दाग देने वाला नाबालिक हुआ। उसका जनेऊ ना हुआ हो तो उसी समय उसे परिवार जन द्वारा जनेऊ पहना दिया जाता है।

15. तीसरे दिन से शाम पीपल के पेड़ के नीचे दिया जलाया जाता है व एक पानी से भरा मटका भी लटकाया जाता है। जिसे शुद्धि के दिन हटा दिया जाता है।

16. तेहरवीं के दिन घर में हवन पूजन के उपरांत लगाए गए तिलक को पूजन के उपरांत मिटा दिया जाता है। वह पंडित जी द्वारा बांधे गए कलावे को तोड़कर हटा दिया जाता है।

17. पंचक नक्षत्र में मृत्यु शुभ नही मानी जाती। पंचक में मृत्यु में ये माना जाता है कि परिवार के अन्य लोगों पर भी संकट आ सकता है। इसलिए पंचक में मृत्यु होने पर मृतक के साथ तिल, जौ को आटे में मिलाकर 5 पुतले बनाकर चिता पर रख दिये जाते है।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर

विश्व हिन्दी सचिवालय

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

हिंदी भाषा के विकास एवं संवर्धन के लिए, हिंदी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे स्थापित करने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन होता है। यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा सम्मेलन होता है जिसमें विश्व भर के हिंदी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार ,भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी की उपस्थिति रहती है। भोपाल में दसबाँविश्व हिंदी सम्मेलन आहूत किया गया था उसकी गरिमायी उपस्थिति तथा भव्यता अपने आप में एक इतिहास थी। 10 मई विश्व हिंदी सम्मेलन में ही 11बे विश्व हिंदी सम्मेलन अतिथि तथा स्थान निर्धारित किया गया था। स्थान था मॉरीशस की राजधानी पोर्टलुई तथा तिथियां थी 18 अगस्त 2018 से 20 अगस्त 2018 तक। विश्व स्तर पर इतने बड़े आयोजन की व्यवस्था करना तथा सभी अन्य व्यवस्थाएं कैसे होती हैं जानने की जिज्ञासा स्वाभाविक है। सौभाग्य से मुझे 11 में विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरीशस में भागीदारी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम विदेश यात्रा तथा विश्व हिंदी सम्मेलन में भागीदारी एक नया ऊर्जा तथा उत्साह पैदा कर रही थी। मॉरीशस भ्रमण के दौरान विशेष तौर से विश्व हिंदी सचिवालय का भ्रमण मेरे द्वारा किया गया सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु तथा विश्व हिंदी सचिवालय की आज तक की यात्रा का विवरण आपके सामने प्रस्तुत करने का साहस जुटा सकी।

विश्व हिंदी सचिवालय : सन 1975 में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन आहूत किया गया। सम्मेलन में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम की गरिमामय उपस्थिति थी। सम्मेलन में प्रधानमंत्री सर रामसागर गुलाम जीने विश्व स्तर पर हिंदी गतिविधियों के समन्वय के लिए एक संस्था की स्थापना का विचार रखा हिन्दी को प्रतिष्ठा दिलाने का नियमित तथा सुसम्बद्ध तरीके से चले एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी केन्द्रकी स्थापना होजहाँ भारत के बाहर के देशों में हिन्दी का प्रचार हो उनके विचारों ने एक सभी के मन्तव्य का रूप ले लिया। काफी विचार मंथन चिंतन मनन के बाद भारत तथा मारीशस की सरकारों के बीच स्थापना की सहमति बनी। तथा दोनों सरकारों के समझौते पर हस्ताक्षर हुए। 20 अगस्त 1999 को समझौते का ज्ञापन बना। 21 नवंबर 2001 को दोनों देशों में समझौता हुआ तथा 12 नवंबर 2002 मॉरीशस विधानसभा में हिंदी सचिवालय अधिनियम पारित हुआ। दिनांक 11 फरवरी 2008 मैं विश्व हिंदी सचिवालय में कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

उद्देश्य : सचिवालय का मुख्य उद्देश्य एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का प्रचार तथा हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए एक वैश्विक मंच तैयार करना था।

व्यवस्थायें : विश्व हिंदी सचिवालय अधिनियम 2002 की धारा 9 के अनुरूप मॉरीशस सरकार तथा भारत सरकार द्वारा मनोनीत मंत्री गण के अतिरिक्त दोनों देशों की सरकारों द्वारा मनोनीत हिंदी क्षेत्र में ख्यात प्राप्ति दो विद्वान शासी परिषद के सदस्य होते है। शासी परिषद के सदस्य।

1) स्वर्गीय नरेंद्र कोहली जी आप लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार थे जिनका कि सम्मेलन के पश्चात स्वर्गवास हुआ।

2 श्री सत्यदेव टैगर 3 प्रो सत्यवतशास्त्री

4 डॉक्टर उदय नारायणगेगू

सचिवालय की पूरी व्यवस्था का कार्य कार्यकारिणी बोर्ड के अधीन होता है। दोनों सरकारों के समझौतों के अनुसार प्रथम महासचिव सचिवालय का मॉरीशस का होगा जिसका कार्यकाल 3 वर्ष रहेगा। 29 अगस्त 11:00 में श्रीमती पूनम जुनेजा महासचिव बनी उसके पश्चात 2010 में उप महासचिव डॉ राजेंद्र प्रसाद को महासचिव का अतिरिक्त प्रभार दिया गया।

समझौते के अनुसार प्रमुख सचिव भारत का होगा जो डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी थे। प्रारम्भ में सचिवालय एक भवन में संचालित होता था। उसका अपना स्वयं का भवन नहीं था। विश्व हिंदी सचिवालय के लिए एक नए भवन का निर्माण कर पुराने सचिवालय को उस में स्थानांतरित कर दिया गया। इस नए भवन का उद्घाटन सन 2018 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति कोविद जी ने किया। नया सचिवालय पुष्पी पौधों और हरे-भरे वृक्षों से घिरा है। बहुत सुंदर स्थान है। सचिवालय के अंदर एक सभागृह एक पुस्तकालय भी है। 11 मई विश्व हिंदी सम्मेलन जो कि मारीशस में हुआ था उसमें यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सचिवालय की उप शाखाएं अन्य देशों में हो। विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना सार्थक सिद्ध हुई दोनों देश मिलकर गिरमिटिया देशों में हिंदी भाषा को पुनर्स्थापित करने का कार्य कर रहे हैं। गिरमिटिया अंग्रेजों ने उन भारतीय मजदूरों को कहा जिन्हें गुलाम बनाकर फिजी गयाना मॉरीशस आज देशों में भेजा जाता था। इनमें सर्वप्रथम 1834 में 36 मजदूर लाए गए थे। यही कारण है कि आज मॉरीशस तथा गिरमिटिया देशों में भारतीय संस्कृति जीवित है। तथा हिंदू धर्म में उनकी आस्था है।

भारत के महान संत श्रृंखला - श्री रामालिंगम स्वामी

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

तमिलनाडु के वडलुर जिले में एक महान संत हुए हैं ,श्री रामलिंगम स्वामी, जिनके बारे में उत्तर या पूर्वी भारत में बहुत कम जानकारी है। इस श्रृंखला का यही प्रयास है कि भारत के महान संतों की जानकारी हम सबको प्राप्त हो। श्री रामालिंगम स्वामी को भारत और विदेशों में वालालार के नाम से जाना जाता है। श्री रामलिंगम स्वामी का जन्म 5 अक्टूबर 1823 में श्री चिदम्बरम मंदिर से 16 किलोमीटर दूर मड़रूर गांव में हुआ। जब श्री रामलिंगम 5 माह के हुए तो उनकी माता चिन्नम माई और पिता रमैया पिल्लई, चिदम्बरम मंदिर ले गए। जब नटराज (भगवान शिव) की प्रतिमा पर से पर्दा हटाया गया तो रामालिंगम स्वामी जोर से हंसने लगे और पूरे मंदिर में दिव्य शान्ति छा गई। भगवान शिव और बालक रामलिंगम के मध्य वार्तालाप को देखता हुआ मंदिर का पुजारी दौड़ता हुआ आया और उसने घोषणा करी ये बालक ईश्वर पुत्र है और बहुत बड़ा संत होगा। श्री रामालिंगम स्वामी ने बाद में बताया कि जैसे ही ईश्वर की ज्योति उनके ऊपर पड़ी उनके शरीर में ईश्वरीय आनंद छा गया था और वे प्रसन्नता वश हंसने लगे थे। बालक रामलिंगम बचपन से ही बहुत मेधावी और भगवान् भक्त थे।उनकी पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी। उन्होंने अपने कमरे में एक शीशा रखा और एक दीपक और उसके सामने बैठ कर वे गहन ध्यान करने लगे। उन्हें पहले दर्शन श्री कार्तिकेय स्वामी (श्री मुरुगन) के हुए। 5 वर्ष की आयु से ही उन्होंने ईश्वर की प्रशंसा में कविताएं लिखना शुरू कर दिया था। उनकी उच्च आध्यात्मिकता देख कर शिक्षक ने उन्हें पढ़ाने से मना कर दिया। श्री रामालिंगम स्वामी ने लिखा कि उन्हें जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है वो सिर्फ ईश्वर संपर्क से हुआ है। श्री रामालिंगम स्वामी ने बहुत गहन साधना करी। यहां तक कि भोजन और निद्रा का भी त्याग कर दिया। 13 वर्ष की आयु में श्री रामालिंगम स्वामी ने सन्यास ले लिया। श्री रामालिंगम स्वामी ने ईश्वर को प्रकाश(अरूत पेरूम ज्योति) बताया। उन्होंने कहा इस मनुष्य शरीर के लिए मृत्यु आवश्यक नहीं है। मनुष्य अपने शरीर से अमरत्व प्राप्त कर सकता है। श्री रामा लिंगम स्वामी ने साधना के बल पर अपने शरीर में तीन परिवर्तन किए।

प्रथम परिवर्तन : श्री रामालिंगम स्वामी का मनुष्य शरीर पूर्ण शरीर में बदल गया। पूर्ण शरीर में कोई रोग,आयु, सर्दी, गर्मी, बरसात या मृत्यु का प्रभाव नहीं होता।

द्वितीय परिवर्तन : श्री रामालिंगम स्वामी का पूर्ण शरीर दयामय शरीर में बदल गया। इस शरीर में उनका रूप एक बालक के समान होगया।उनका शरीर देखा जासकता था किंतु छूआ नहीं जासकता था। उन्हें इस शरीर में सारी सिद्धियां प्राप्त हो गईं।

तृतीय परिवर्तन : श्री तामालिंगम स्वामी के शरीर का तृतीय और अंतिम परिवर्तन दयामय शरीर से परमानंद शरीर में हुआ जो ईश्वरीय है और सर्व विद्यमान है। इस शरीर की कोई मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता।

श्री रामालिंगम स्वामी की शिक्षाएं : श्री रामालिंगम स्वामी के समय जाति प्रथा बहुत प्रचलित थी। स्वामी जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। सन 1867 में श्री रामालिंगम स्वामी ने सत्य धर्म सलाई नामक सेवा शुरू की जहां सभी धर्म, जाति के मनुष्यों को निशुल्क भोजन मिलता था। ये सेवा आज भी सभी को निशुल्क भोजन प्रदान करती है। 1872 में श्री रामालिंगम स्वामी ने सत्य ज्ञान सभा की वडलुर (तमिलनाडु) में स्थापना करी। ये सभा आज भी है। सत्य ज्ञान सभा सभी धर्म ,जातियों के लिए आज भी खुली है। सिर्फ मांसाहारी इसमें प्रवेश नहीं कर सकते। यहां कोई फल, फूल या प्रसाद नहीं चढ़ाया जाता। यहां पर श्री रामालिंगम स्वामी ने जो दीपक जलाया था वो आज भी निरंतर प्रज्वलित रखा गया है। यहां सात सूती पर्दे हैं जो मनुष्य की आत्मा को अपना असली स्वरूप पहचानने में सात बाधाओं को दर्शाते हैं। इस सभा की एक प्रमुख शिक्षा थी कि प्राणियों की सेवा, मोक्ष का मार्ग है। श्री रामालिंगम स्वामी ने शाकाहार पर बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा ज्ञान और दया ही ईश्वर हैं और इससे ईश्वर को प्राप्त किया जासकता है। श्री रामालिंगम स्वामी ने गरीबों को भोजन कराने को ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा कहा। 30 जनवरी 1874 को श्री रामालिंगम स्वामी ने अपने शिष्यों को बुलाया और कहा वे जीवन समाप्त कर रहे हैं। उन्होंने सत्य ज्ञान सभा भवन में प्रवेश किया और शिष्यों से कहा दरवाजे का ताला न खोला जाय क्योंकि वहां कुछ नहीं मिलेगा। मई 1874 में सरकार के हस्तक्षेप से जब दरवाजा खोला गया तो वहां सिर्फ ज्योति थी। श्री रामालिंगम स्वामी सशरीर ईश्वर में विलीन हो चुके थे। श्री रामालिंगम स्वामी का आदर्श हम सब के लिए यही है कि इस शरीर से सब संभव है। हमें प्रयास अवश्य करना चाहिए।

यज्ञोपवीत संस्कार

- डॉ. सहदेव कृष्ण चतुर्वेदी
साहित्याचार्य एम.ए., पीएच.डी. मथुरा

मानव जीवन का सम्बन्ध ऋषियों के साथ पितरों एवं देवशक्तियों के साथ रहता है। उन्हीं की शक्तियों से मानव विद्वान, सम्पन्न और सन्तानवान होकर सृष्टि का विस्तार करता है। हम जिसे चतुर्विध पुरुषार्थ कहते हैं और जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सफलता मिलती है। वह इन्हीं देव, ऋषि और पितृ शक्तियों पर निर्भर रहती है। इन्हीं के संवर्धन के लिये यज्ञों का विधान किया गया है। जिनके 21 प्रकार माने गये हैं। अर्थात 21 प्रकार के यज्ञ करने से देव, ऋषि एवं पितरों की शक्ति बढ़ती है, किन्तु इन सभी यज्ञों को करने से पूर्व यज्ञकर्ता को संस्कार सम्पन्न होने की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन्हीं सभी के द्वारा वह व्यक्ति जहाँ यज्ञ करने का अधिकारी होता है वहीं ब्रह्म प्राप्ति के योग्य शरीर का निर्माण भी करता है। माता पिता के रजोवीर्यगत दोष के कारण सन्तान में शारीरिक और मानसिक बहुत सी त्रुटियाँ रह जाती हैं। जिन्हें संस्कार के माध्यम से दूर किया जाता है। अब ये संस्कार कितने होते हैं। इसमें अलग-अलग मत प्राप्त होते हैं। गौतम धर्म सूत्र में इनकी संख्या 40 से 48 बताई गई है, महर्षि सुमन्त एवं अंगिरा ने 25 मानी है। किन्तु महर्षि वेदव्यास ने अपने स्मृति ग्रन्थ में 16 संस्कारों का उल्लेख किया है। यह हैं - गर्भाधान पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, आपसश्याधान तथा श्रोताधन हम यहाँ इनमें से उपनयन अर्थात यज्ञोपवीत संस्कार के विषय में प्रकाश डालेंगे। गर्भाधान से लेकर कर्णवेध तक 9 संस्कार होते हैं इनमें से कुछ ही हो पाते हैं, ऐसे न हुए संस्कारों को पूर्ण करने हेतु यज्ञोपवीत संस्कार में उनके प्रायश्चित की आहूति आदि डाल उन्हें पूर्ण किया जाता है।

उपनयन संस्कार कोई साधारण संस्कार नहीं है। मनुस्मृतिकार ने कहा हैः

उपनीते फलं चैतर् द्विजतां सिद्धिपूर्विका।

वेदाधीत्यधिकारस्य सिद्धिऋषि भिरीरिता ।।

अर्थात इस संस्कार के द्वारा बालक ब्राह्मण की श्रेणी में आ जाता है, एवं उसे वेद के अध्ययन का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है।

कोटि जन्मार्जितं पापं ज्ञानाज्ञानकृतं चमत

यज्ञोपवीत यात्रेण पलायन्ते न संशयः

अर्थात करोड़ों जन्मों के ज्ञात अज्ञात प्राप्त पाप यज्ञोपवीत धारण से नष्ट हो जाते हैं।

ब्रह्मणोत्पावितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणीकृतं

रूद्रेण तु कृते ग्रन्थिः सावित्या चाभि मंत्रितम

ब्रह्मा द्वारा निर्मित किया गया विष्णु द्वारा त्रिगुणित किया गया तथा रूद्र द्वारा इसे ग्रन्थि प्रदान की गई। .

अतः यज्ञोपवीत की पवित्रता सदैव रखनी चाहिये।

उपनयनकण करेंः–

स्मृतिकारों ने उपनयन के लिये वर्णों के आधार पर अलग–अलग समय का निर्देश दिया हैः

गर्भाष्टमेके कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायमम।

गर्भादेकादशे रासो गर्भान्तु द्वादशे विशक ।।

(मनु. 2.36)

अर्थात ब्राह्मण बालक का गर्भ से 8वें वर्ष क्षत्रिय का 11वें वर्ष वैश्य का, 12वें वर्ष में करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार ब्राह्मण का 5 या 8 क्षत्रिय का 11 या 12 वैश्य का 12 या 16 वर्ष में मानते हैं। इन वर्षों का निर्धारण में भी हेतु है जैसे वसु 8 होते हैं, जो ब्राह्मणवर्णी हैं, रूद्र क्षत्रिय वर्णी हैं जो 11 हैं, तथा आदित्य जो वैश्य वर्णी हैं वे 12 हैं। इसी प्रकार इसके करने में ऋतु का भी विधान है।

वसन्ते ब्राह्मणं ग्रीष्मे राजन्यं शरदि वैश्यम अर्थात वसन्त ऋतु ब्राह्मण के लिये, ग्रीष्म क्षत्रिय के लिये तथा शरद वैश्य के लिये श्रेष्ठ है। इस प्रकार ब्राह्मण के लिये उत्तरायण का समय श्रेष्ठ माना गया है। दक्षिणायन जो कर्क के सूर्य से लेकर धनु राशि के सूर्य तक रहते हैं वह समय ब्राह्मण के लिये उचित नहीं। माह के अनुसार यह श्रावण से पौष माह तक दक्षिणायन तथा माघ मास से आषाढ़ माह तक उत्तरायण रहता है।

निर्माण विधिः

यज्ञोपवीत है तो सूत के धागों से बना हुआ 9 तार का एक डोरा किन्तु यह नौ तार एक विशेष निधि से बने हुए होने चाहिए तथा इसका निर्माण स्वयं करना चाहिए। अपने हाथ के परिमाण से महर्षि कात्यायन ने इसके निर्माण के संबंध में कहा है किः- यज्ञोपवीत बनाने वाले को किसी तीर्थ, मंदिर या गोशाला में जाकर सन्ध्या वरण कर ऐसे सूत से इसका निर्माण करे जिसे किसी ब्राह्मण या ब्राह्मण कुमारी द्वारा बनाया है। इस सूत को भूः इस मन्त्र का उच्चारण कर 96 अंगुष्ठ सहित चारों उंगलियों के मूल पर लपेटे और उसे उतार कर किसी ढाक के पत्ते पर रखे दे। इसी प्रकार भुवः इस शब्द का उच्चारण कर दूसरी बार और स्वः का उच्चारण कर तीसरी बार हाथ पर लपेटे। बाद में 'आपोहिष्ठा' शनो देवी, तासवितुः इत्यादि तीन मंत्रों से जल से भिगोवे बांये हाथ में रखकर तीन बार फटकारे, फिर तीन व्याहुतियों से उसे एक वय देकर एक रूप बनाले, उन्हीं मंत्रों से विगुणित करे तथा प्रणव से ब्रहम ग्रन्थि बनाये उसके 9 तंतुओं में ऊंकार अग्नि आदि देवताओं का क्रमशः आवाहन करे स्थापना करे।

96 चप्पे क्योंः 95 या 97 क्यों नहीं रसायन शास्त्र के अनुसार कार्बन के अणुओं में एक निश्चित पृथक 2 क्रम और ताप उत्पन्न करके उसे हीरा, काला सीसा तथा चारकोल में परिवर्तित कर दिया जाता है। यह तो सभी जानते हैं कि यदि 2 तोले शहद, 2 तोले मक्खन को मिला दिया जाय तो वह विष बन जाता है। कम या अधिक मिलाने से कुछ नहीं बनता। इस प्रकार हम लोक में देखते है कि निश्चित परिमाण ही कार्य सिद्धि का निमित्त होता है। फलतः यज्ञोपवीत में 96 चप्पों का परिमाण सिद्धिदायक होता है। गायत्री के 24 अक्षर होते हैं, चारों वेदों में व्याप्त गायत्री छन्द के संपूर्ण मिलाकर 24 ग 4 त्र 96 अक्षर होते हैं। चूंकि यज्ञोपवीत ऐसा संस्कार है जिसमें किस बालक को गायत्री एवं वेद दोनों का अधिकार प्राप्त होता है इसलिये इस संख्या की दृष्टि में रखते हुए श्रुति ने 96 चप्पे वाले यज्ञोपवीत को ही धारण करने का विधान किया है।

चतुर्वेदेषु गायत्री चतुर्विंगतिकाक्षरी

तस्माच्चतुर्गुणं कृत्वा ब्रहम तन्तु मुदीरियेत (शिष्ट स्मृति)

वैदिक ऋचाओं की संख्या पंतजलि ने महाभाष्य में 1 लाख बताई है। इसमें 80 हजार कर्मकाण्ड संबंधी है। 1600 उपासना काण्ड संबंधी तथा 4 हजार ज्ञानकाण्ड संबंधी है। ब्रहमचर्य अवस्था अर्थात उपवीत होने के अनन्तर वानप्रस्थ पर्यन्त प्रत्येक द्विजाति कर्म और उपासना का अधिकारी होता है और चतुर्थाश्रम-सन्यास में चले जाने पर उसे ज्ञान का अधिकार मिलता है। वेद की उपर्युक्त मर्यादा के अनुसार चूंकि उपनीत होने वाले व्यक्ति को 96 हजार ऋचाओं का ही अधिकार प्राप्त होता है। अतः उस उपवीत का परिमाण भी 96 चप्पे होना युक्तिसंगत ही है। शेष 4000 ऋचाओं के स्वाध्याय का जब अधिकार प्राप्त होगा तब यज्ञोपवीत की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

लम्बाई/मोटाईः

पृष्ठ वशे च नाम्याच धृतंपद्विन्दतमे कटिम

तद्धर्ममुपवीतं स्थान्नतिलम्बं न चोच्छितम।।

जो कन्धे के उपर से आता हुआ नाभि का स्पर्श करता हुआ कटि तक पहुंचे न इससे नीचे न ऊपर। इसकी मोटाई सरसों की फली की तरह हो। उससे अधिक मोटा होगा तो यशनाशक तथा पतला होगा तो धननाशक होगा।

तीन सूत व त्रिवृतभ्यों : तीन की संख्या एहलौकिक अथवा पारलौकिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक सभी क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखती है। ऋग-यजु साम वेद तीन पृथ्वी अंतरिक्ष भू लोकहीन। सत्व, रज, तम गुण तीन ब्रहमा, विष्णु, महेश प्रधान देवता तीन तथा यज्ञोपवीत के अधिकारी ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तीन ही हैं। इसका अर्थ यह है कि यह ब्रहमचारी, ग्रहस्थ एवं वानप्रस्थ तीन आश्रमों में रहते हुए धारण किया जाता है। चतुर्थ आश्रम में पहुंचने पर जब मनुष्य स्मति ज्ञान मार्ग की ओर अग्रसर होता है तब यज्ञोपवीत का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। चूंकि

नव तन्तु के 9 देवताः

1. ऊँकार (ब्रहमलाभ), 2. अग्नि (तेजस्विता), 3. नाग (धैर्य), 4. चन्द्र (आहलादकत्व), 5. पितृगण (स्नेह), 6. प्रजापति (प्रजापालन), 7. वायु (शुचित्य), 8. सूर्य (प्राणत्य), 9. सर्वदेव (सर्वगुण)।

ब्रहमग्रन्थि : यह ब्रहम सूचक होने के कारण ब्रहम ग्रन्थि कहलाती है। प्रणव रूपी महामंत्र स्वयं समस्त वेद राशि का संक्षिप्त रूप है। उसमें विद्यमान तीनों वर्ण सत्व रज एवं तम तथा ब्रहमा विष्णु रूद्र रूपी ब्रहमाण्ड नियामक तीनों शक्तियों के प्रतिनिधि है। इस ब्रहमग्रन्थी के ऊपर अपने-अपने गोत्र प्रकरादि के भेद है। 1, 3 या 5 गांठ लगाने का विधान है।

यज्ञोपवीत क्यों : ब्रहमचरिण एकंस्यात स्नातकस्य द्वे बहुनिया (अश्वलायन ग्रहय सूत्र)

यज्ञोपवीते हे धार्मे श्रोते स्मर्ति च कर्मणि

तृतीयमुतरार्थे च वस्याभावे तदिष्यते (हेमाद्रि)

ब्रहमचारी को एक स्नातक को 2 या उससे अधिक, श्रोत, स्मार्त कर्मों की निष्पत्ति के लिये 2 यज्ञोपवीत धारण करने चाहिए, चूंकि ब्रहमचारी रहते हुए ग्रहस्थाश्रम में होने वाले काम्यकर्मादि नहीं करने पड़ते। अतः ग्रहयसूत्रकारों ने उसे यज्ञवेदी पर एक ही यज्ञोपवीत धारण करने का विधान किया है। स्नातक हो जाने पर मनुष्य को सभी प्रकार के श्रोत और स्मार्त कर्मों के करने की आवश्यकता पड़ती है। अतः उभयविधि कर्मों के प्रतिनिधि स्वरूप 2 यज्ञोपवीत धारण करने का नियम है। लोग कहते है दूसरा यज्ञोपवीत स्त्री के हिस्से का है। इसका तात्पर्य इतना ही है कि चूंकि स्त्री के आ जाने पर समावर्तनान्तर ग्रहस्थ में प्रवेश कर लेने पर ही यह दूसरा यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। अतः लक्षणा से स्त्रीमूलक होने के कारण इस यज्ञोपवीहत को स्त्री के हिस्से का कहना अनुपयुक्त नहीं। इसके अतिरिक्त सगुण और निर्गुण भेद से उभयविध ब्रहम को प्राप्त करने वाले होने के कारण 2 ही ब्रहम सूत्र धारण करने चाहिए। यदि उत्तरीय वस्त्र न हो तो तीसरा यज्ञोपवीत भी धारण कर सकते हैं।

कान पर क्यों रखते हैं:

यों तो मानव शरीर का उपरी भाग सिर आदि ज्ञान का केन्द्र होने से पावन माना जाता है, किन्तु उसमें भी दाहिने कान को विशेष महत्व दिया गया है:-

आदित्या वसवो सत्र वायुरग्निश्च धर्मराह।

विप्रस्य दक्षिणे कर्णे नियं तिष्ठन्ति देवताः।।

अर्थात दांहिने हाथ में आदित्य रूद्र आदि देवताओं का निवास है। अतः जब शरीर अपावन होता है, तो पवित्रता की दृष्टि से इसे दांहिने कान पर रखने का विधान किया गया है।

यज्ञोपवीत कब बदलें:

सूतके मृतके सौरे चाण्डाल स्पर्शने तथा।

रजस्वला शवस्पर्शे धार्य मन्यन्नयं तदा। (नारा. संग्रह)

अर्थात - यज्ञोपवीत के टूट जाने पर, परिवार में जन्म या मृत्यु होने पर, रजस्वला, चाण्डाल अथवा शव के स्पर्श होने पर, श्रावणी, ग्रहण पर, कान से नीचे हट जाने पर (शौच समय) अथवा यज्ञादि के समय इसे बदलना चाहिए।

प्रेम

एक सुनार से लक्ष्मी जी रूठ गई। जाते वक्त बोली मैं जा रही हूँ और मेरी जगह नुकसान आ रहा है। तैयार हो जाओ। लेकिन मैं तुम्हें जाते जाते अंतिम भेंट जरूर देना चाहती हूँ। मांगो जो भी इच्छा हो। सुनार बहुत समझदार था। उसने विनती की नुकसान आए तो आने दो, लेकिन उससे कहना की मेरे परिवार में आपसी प्रेम बना रहे। बस मेरी यही इच्छा है। लक्ष्मी जी ने तथास्तु कहा। कुछ दिन के बाद सुनार की सबसे छोटी बहू खिचड़ी बना रही थी। उसने नमक आदि डाला और अन्य काम करने लगी। तभी दूसरे लड़के की बहू आई और उसने भी बिना चखे नमक डाला और चली गई। इसी प्रकार तीसरी,चौथी बहुएं आई और नमक डालकर चली गई। उनकी सास ने भी ऐसा किया।

शाम को सबसे पहले सुनार आया। पहला निवाला मुँह में लिया। देखा बहुत ज्यादा नमक है।लेकिन वह समझ गया नुकसान (हानि) आ चुका है। चुपचाप खिचड़ी खाई और चला गया। इसके बाद बड़े बेटे का नम्बर आया। उसने पहला निवाला मुँह में लिया। उसने पूछा पिता जी ने खाना खा लिया? क्या कहा उन्होंने ? सभी ने उत्तर दिया-हाँ खा लिया, कुछ नही बोले। अब लड़के ने सोचा जब पिता जी ही कुछ नही बोले तो मैं भी चुपचाप खा लेता हूँ।

इस प्रकार घर के अन्य सदस्य एक - एक कर आए। पहले वालों के बारे में पूछते और चुपचाप खाना खा कर चले गए।

रात को नुकसान (हानि) हाथ जोड़कर

सुनार से कहने लगा - मैं जा रहा हूँ।

सुनार ने पूछा- क्यों ? तब नुकसान (हानि) कहता है, कि आप लोग एक किलो तो नमक खा गए। लेकिन बिलकुल भी झगड़ा नहीं हुआ। मेरा यहाँ कोई काम नहीं।

इसका अर्थ है कि झगड़ा कमजोरी, हानि, नुकसान की पहचान है। जहाँ प्रेम है। वहाँ लक्ष्मी का वास है। सदा प्यार - प्रेम बांटते रहे। छोटे -बडे की कद्र करें। जो बड़े हैं, वो बड़े ही रहेंगे। चाहे आपकी कमाई उसकी कमाई से बड़ी हो। अच्छे के साथ अच्छे बनें, पर बुरे के साथ बुरे नहीं क्योंकि हीरे से हीरा तो तराशा जा सकता है लेकिन कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं किया जा सकता।

- **संजय मिश्रा,** कानपुर

शाखा समाचार

दिल्ली

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली की कार्यकारिणी बैठक 18 सितम्बर को श्री अभिषेक जी के आग्रह पर MGM क्लब, दरियागंज में आयोजित हुई। बैठक में सर्वश्री महेश जी, श्री अतुल कान्त जी, श्री कौशल जी, श्री ज्ञानेन्द्र जी, श्री अभिषेक जी, श्री अरविंद जी (नोएडा), श्री अश्विनी जी, श्री दिवाकर जी एवं श्री लोकेन्द्र जी उपस्थित थे। बैठक को निम्न निर्णय लेकर कार्यान्वित किया:–

1. सर्वप्रथम 24 अक्टूबर को दिल्ली NCR का दीपावली मिलन करने के लिये तारीख निर्धारित की गई एवं उपयुक्त स्थान देखने का निर्णय किया। श्री महेश जी एवं श्री ज्ञानेन्द्र जी को इस कार्य के लिए अधिकृत किया गया एवं समयाभाव के कारण अतिशीघ्र निर्णय लेने के लिए कहा गया।

2. दिल्ली NCR डायरेक्टरी को जल्द से जल्द पूर्ण करने का प्रयास किया जाय। बैठक में बताया गया कि आउटसोर्स द्वारा डाइरेक्टरी डाटा संग्रह का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। सभी सदस्यों एवं बान्धवों से अनुरोध किया जाता है कि वह नीचे दिए गए लिंक का उपयोग कर विवरण दें ताकि डायरेक्टरी में नए एवं छूटे हुए लोगों का विवरण सम्मिलित हो सके:

डायरेक्टरी फॉर्म की लिंक

https://forms.gle/i49Zz3qygqFachHh8

3. सभी कार्यकारिणी सदस्यों से आग्रह किया गया कि वह कम से कम रुपये 10,000/– का विज्ञापन अपने पास से या अन्य माध्यम एकत्र कर देने का प्रयास करें।

परिचय पत्रिका विज्ञापन हेतु निम्न दरें निर्धारित हैं :

*पहला अंदर का कबर रंगीन .. 15,000/–

*पिछला अंदर का कबर रंगीन .. 10,000/–

*अंदर का रंगीन .. 5,000/–

*अंदर का श्वेत श्याम .. 3,000/–

*शुभकामना संदेश .. 500/–

*पिछला कबर .. (अधिकतम सहायता के लिए प्रयास)

सभी बांधवो से आग्रह है कि वह अपना विज्ञापन निर्धारित दर के साथ अधिकाधिक संख्या में देने की कृपा करें एवं भुगतान विवरण तथा विज्ञापन के साथ नीचे दिए मोबाइल न. व मेल ID पर सम्पर्क करें।

महेश चन्द्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष, Mob No. 9868875645

Mail ID: mcchaturvedi47@gmail.com

लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव , Mob No. 9312221747

Mail ID: lnchaturvedi@rediffmail.com

दिल्ली शाखा की बैंक खाते की जानकारी निम्न है:

Shri Mathur Chaturvedi Shakha Sabha Delhi, Central Bank of India, Anand Vihar Branch, Delhi – 110092

A/c. No. 3888988361 IFSC Code CBIN0283533

अंत में श्री अभिषेक जी को सुव्यवस्थित बैठक एवं सुमधुर भोजन कराने के लिए सचिव द्वारा धन्यबाद ज्ञापित किया गया।

लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव

दिल्ली

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा दिल्ली की कार्यकारिणी बैठक 6 नवम्बर 2021 को श्री महेश जी (सभापति) के आग्रह पर उनके निवास पर आयोजित हुई। बैठक में सर्वश्री महेश जी, ज्ञानेन्द्र जी, लोकेन्द्र जी एवं श्री मयंक जी उपस्थित थे। बैठक को बुलाने का मुख्य उद्देश्य था कि चतुर्वेदी चंद्रिका के माह नवम्बर 2021 में प्रकाशित गुरुग्राम शाखा सभा की रिपोर्ट में दिल्ली सभा में विलय का मौखिक प्रस्ताव पर प्रकाश डाला एवं बताया कि उन्होंने कभी इस तरह का कोई प्रस्ताव किसी भी सभा को नहीं दिया है। श्री महेश जी से हुई वार्ता एवं चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट के आधार पर दिल्ली सभा में गुरुग्राम सभा के विलय करने का कोई प्रस्ताव नहीं है। बात समझने या समझाने में कुछ गलतफहमियां उत्पन्न हो गयी। यहाँ सिर्फ उद्देश्य सहभागिता के साथ सामूहिक कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है। जिसके बारे में बाद में समय पर सूचित किया जाएगा। अखिलेश जी को गुरुग्राम सभा का सभापति निर्वाचित होने पर बधाई। अंत में महेश जी को सुव्यवस्थित बैठक एवं सुमधुर भोजन कराने के लिए सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। सादर पालागन

महेश चन्द्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष

भोपाल

स्थानीय सभा के सम्माननीय संरक्षकों की बैठक दिनांक 31.10.2021 को मेरे निज आवास पर संपन्न हुई। इस बैठक में श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, शाखा भोपाल के अभी तक के सभी संरक्षक आमंत्रित थे। सर्वश्री भरत जी, श्री बृजेश जी, श्री राजेश जी के अतिरिक्त शाखा सभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र जी एवं कोषाध्यक्ष ललित जी इस बैठक में उपस्थित रहे। विकास जी (मौली) एवं शशांक जी अपनी अस्वस्थता के चलते बैठक में उपस्थित नहीं हो सके।

बैठक में पहला विषय 2 वर्ष के कार्यकाल की समीक्षा का

था। चर्चा के दौरान बताया गया कि कोरोना के चलते विगत 2 वर्षों में सभी का एक साथ मिलना संभव नहीं हो सका। फिर भी शाखा सभा के द्वारा होली मिलन, पिकनिक एवं गणेश उत्सव का कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया,जो सराहनीय है। बैठक में दूसरा विषय समाज के एकीकरण के लिए किए गए प्रयासों पर विचार - इसके अंतर्गत अध्यक्ष श्री सुरेंद्र जी द्वारा बताया गया कि किए गए प्रयास सफल नहीं हो सके हैं और अब किसी से चर्चा भी नहीं की जा रही है। चर्चा के दौरान श्री अजय जी (चुना भट्टी) एवं श्री अनिल जी सेवानिवृत्त जज एवं शाखा सभा के उपाध्यक्ष को समाज एकीकरण के उनके प्रयासों के लिए एवं सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया। बैठक में सर्वसम्मति रही की अब हमें अपनी और से एकीकरण के बाबत कोई प्रयास अथवा कार्यवाही नहीं करना है। एक बात और सामने आई वह यह कि समाज के कुछ बंधु यह कहते हैं कि हम तो यहां भी जाते हैं, वहां भी जाते हैं। इस पर बस इतना ही कहा जा सकता है कि घर में बर्तन फूटा हो तो अपशकुन माना जाता है। समाज विचार करें। चर्चा में यह बात सामने आई की भोपाल शाखा सभा का पंजीयन नहीं है इसलिए यह कहा जाता है कि शाखा सभा भोपाल में एकीकरण या विलीनीकरण नहीं किया जा सकता है। इस पर चर्चा में यह बताया गया की शाखा सभा, भोपाल विगत लंबे समय से समाज के बीच कार्य कर रही है, जो श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से संबंद्ध है और महासभा से संबद्धता प्रमाण पत्र प्राप्त है। अतः यदि समाज के अंदर अन्य कोई समूह कार्य कर रहा है तो वह समाज के विभाजन का कारण है और उसका अस्तित्व स्वीकार योग्य नही है। उसमें श्री माथुर चतुर्वेदी सभा शाखा भोपाल के विलीनीकरण का कोई औचित्य नहीं है। अन्य विषय के अंतर्गत चर्चा की गई की श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अंतर्गत सम्बध्द सभाओं की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित होनी चाहिए। शाखा सभा भोपाल का बैंक अकाउंट का ऑपरेशन अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष के माध्यम से किया जावेगा। कोरोना के कारण पिछले 2 वर्ष में बैंक अकाउंट के संचालन की प्रक्रिया नहीं की जा सकी। अब इसके लिए आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

- सुरेंद्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष

कोटा

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोटा की साधारण सभा की बैठक दिनांक 07.11.21 को चतुर्वेदी सभा भवन, कोटा आयोजित की गई। इसी अवसर पर समाज का दीपावली स्नेह मिलन एवं अन्नकूट महोत्सव भी मनाया गया। कार्यक्रम में बाँधवों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन शशि जी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व महासचिव श्रीनंदन जी ने की। मुख्य एवं विशिष्ठ अतिथियों सर्वश्री दीनदयाल जी, कौशलकिशोर जी, महेन्द्रनाथ जी, रूपकिशोर जी व अम्बिकादत्त जी को मंचासीन कराया गया। शाखासभा के अध्यक्ष विनय जी और महासचिव आलोक जी भी मंच पर उपस्थित थे। उपस्थित अतिथियों दीप प्रज्वलित कर कुलदेवियों माँ महाविद्या, माँ चर्चिका तथा लक्ष्मी,गणेश और सरस्वती की पूजा अर्चना की। इसके उपरान्त अर्चना (पिंकी)चतुर्वेदी, रेणु, अरुणा, आराधना, मनीषा, राखी, सरिता और अन्य द्वारा ईश वन्दना गाई गई। समाज के होनहारों का वर्ष 2020-21 में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिये लेफ्टिनेंट कर्नल उदित जी, आनन्द जी, मनीष जी को आई. आई. टी. में चयन के लिये पलक चतुर्वेदी, राज्य स्तरीय बेडमिंटन में चयन हेतु मोहक चतुर्वेदी, दौड़ों में विशेष उपलब्धि के लिये गोविन्द चतुर्वेदी और अमित को तथा कोविड-19 के दौरान अपनी विशिष्ठ सेवायें देने वाले कोरोना वारियर्स डॉ. गौरव, डॉ. अनुपमा, श्रीमती ऋचा, श्रीमती अरुणा, कमलकुमार को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, महासभा द्वारा जारी कामधेनु रुपी गुल्लक व केलेन्डर भेंट कर सम्मानित किया गया। आलोक जी ने बताया कि जनवरी 2021 में चुनाव अधिकारी अनिल जी की देखरेख में शाखासभा के विभिन्न पदों के सर्वसम्मति से चुनाव हुए तथा कार्यकारिणी का गठन किया गया। उन सभी का परिचय कराया गया। सभा का वार्षिक प्रतिवेदन, पिछले दो सालों के क्रिया कलाप, कोरोना के दौरान जरुरतमंदों की सहायता का जिक्र किया। उन्होंने आय व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि भवन निर्माण के समय जो 8,36,000/- बिना ब्याज उधार लिये गये थे। वह सारी राशी पिछले वर्ष तक चुकता कर दी गई है। शाखासभा पर अब कोई देनदारी बकाया नही है। उन्होंने समाज के उन सभी दानदाताओं का आभार व्यक्त किया। जिन्होंने सभा भवन के निर्माण में अपनी क्षमता से भी ज्यादा सहयोग के कारण इस भवन का निर्माण करवाकर कोटा का नाम गौरवान्वित किया। संविधान में चुनाव सम्बन्धि संशोधन प्रस्तुत किये गये जिसे सर्वसम्मति से सहमति प्रदान की गई।

मंच संयोजक श्री शशि चतुर्वेदी बीच बीच में महासभा द्वारा चलाई जा रही अन्नपूर्णा योजना में सहयोग, कामधेनु रुपी गुल्लक जिसे पूजा घर में भी रखकर विशेष अवसरों पर अपनी इच्छित राशि डालकर महासभा को सहयोग करने की अपील

कर रहे थे। उन्होंने समाज व देश के प्रति दायित्व निभाते हुए नेत्रदान करने की भी अपील की। जनगणना के लिये फॉर्म वितरित किये गये जिसे भरकर देने का अनुरोध किया। गरमागरम चाय व नाश्ते का दौर अपने स्थान पर ही पहुँचाकर चल रहा था। इसके बाद महिला मन्डल द्वारा समाज के लोक गीतों की प्रस्तुति दी गई। जिसमें मुख्य भूमिका अर्चना, रेणु, अरुणा, बिन्दु, राखी , श्यामाजी, सरिता, प्रिया, प्रीता, अन्जुल, वन्दना, रीता, रूपा, शोभा और उनके समूह ने निभाई। महिला मंडल द्वारा विभिन्न प्रकार के खेलों का भी आयोजन किया गया। विजयी उम्मीदवारों को आकर्षक पुरुस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सामूहिक रूप से प्रस्तुत की गई महा आरती का रहा जिसने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये। लक्ष्मीजी की तस्वीर के सामने 101 दियों को प्रज्वलित किया गया, औरतें अपने अपने घरों से आरती की थाली सजाकर लाई थी। कोरोना काल में समाज ने अपने कई प्रियजनों को खोया था उन्हें दो मिनिट को मौन रख श्रद्धान्जलि अर्पित की गई। अन्त में सभा अध्यक्ष श्री विनय चतुर्वेदी ने सभी का आभार व्यक्त किया, कार्यक्रम की सुचारु व्यवस्था में विशिष्ठ भूमिका निभाने के लिये श्री शिव जी, अतुल जी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी तरुण जी, डॉ. मनीष, संयुक्त सचिव श्री विजय चतुर्वेदी, मन्थन तथा प्रीत कमल आदि को धन्यवाद ज्ञापित किया। सबको भोजन के लिये आमन्त्रित किया। सुस्वादु भोजन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

– आलोक चतुर्वेदी महासचिव

मैनपुरी

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा, मैनपुरी के अध्यक्ष श्री मनोज मिश्रा (एम. बाबू) की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 28/10/2021 को उनके आवास पर आहूत की गई। कार्यकारिणी की प्रथम बैठक में अध्यक्ष मनोज जी ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की एवं दीपक मिश्रा जी द्वारा प्रस्ताव रखा गया कि शाखा सभा को महासभा से संबद्ध किया जाए। इस प्रस्ताव का समर्थन दीपेंद्र नाथ जी ने किया। जिसके लिए आवश्यक कार्रवाई हेतु सर्वसम्मति से सहमति प्रदान की गई। तत्पश्चात श्री मनोज जी (एम.बाबू) ने अपनी कार्यकारिणी घोषित की। जिसमें अध्यक्ष मनोज मिश्रा (एम. बाबू) संरक्षक – सर्वश्री भूपेंद्र नाथ चतुर्वेदी, योगेश चतुर्वेदी, प्रदीप चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष – दीपेंद्र नाथ चतुर्वेदी, मुकुल मिश्रा, मंत्री – प्रशांत चतुर्वेदी, सह मंत्री – गुंजन चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष – दीपक मिश्रा, कार्यकारिणी सदस्य – देवेश चतुर्वेदी, नीरज चतुर्वेदी, प्रवीन चतुर्वेदी, शिशिर चतुर्वेदी, संजय चतुर्वेदी, यतीश चतुर्वेदी, गौरव चतुर्वेदी, संदीप चतुर्वेदी व वैभव चतुर्वेदी।

– मनोज चतुर्वेदी, अध्यक्ष

पुरानी यादें

– **हरिप्रिया** (अंजली चतुर्वेदी,भवानी मंडी)

फिर एक नया साल,फिर एक दफ़ा दिवाली आई,
फिर कुछ खट्टी – मीठी यादें,फिर कुछ अटखेलियाँ साथ लाई।
फिर कुछ पुरानी चीज़ें, आँखों में समंदर – सा उठाव लाई,
फिर उन से मेरा नाता,शब्द – दर – शब्द बयान कर आई।
बाबा की कही वो सारी बातें याद आई,
मेरा सारा बीत हुआ कल अपने साथ ले आई।
कुछ पुरानी तस्वीरें भी साथ ही साथ हाथ आई,
साथ में मुझे उन्हीं पुराने दिनों में घुमा लाई।
वो दिन जब घर के बुजुर्गों का साथ था,
न कल की फ़िक्रि थी न कुछ कर दिखाने का वादा था।
सब लोग मिल – जुल कर रहा करते थे,
न कोई अपना था न कोई पराया था।
नए कपड़े और पटाखे आने पर घर – घर में दिखाने जाना,
इन्हीं छोटी – छोटी ख़ुशियों में बड़े – से – बड़े त्योहार का मन जाना।
आज जब ये सारी चीजें सामने आ गई,
इन्हें खोने के ग़म के साथ चेहरे पर मुस्कुराहट भी छा गई।
यादों की जो कैसेट इन सब के साथ घूम कर पीछे चली गई थी,
अब घूम कर वापस आज में आ गई थी।
दिवाली की वो रौनक आज भी बरकरार है,
कुछ नई यादें संजोने को हम आज भी तैयार हैं।
वही सारी यादें मैंने फिर से संभाल कर रख दी हैं,
वही सारी बातें फिर से याद आएँ इसी लालच में किसी को भी छूने तक नहीं दी हैं।
अगले साल फिर दिवाली आएगी,
इन सुनहरे पलों को याद करने का मौका फिर से साथ लाएगी।
फिर कुछ खट्टी – मीठी यादें बन जाएँगी,
फिर वही दिल वाली दिवाली आएगी।

समाज समाचार

* श्रीमती कुसुमलता चतुर्वेदी पत्नी श्री श्याम मनोहर चतुर्वेदी (पुत्रवधु स्व. श्रीमती कान्तीदेवी –स्व.प्रकाश चंद्र चतुर्वेदी) निवासी झालावाड़/कोटा अपनी प्रधानाचार्या उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटा के पद की राजकीय सेवा से दिनांक 31.10.2021 को सेवानिवृत हो गई। इस अवसर पर उन्होंने महासभा की अन्नपूर्णा योजना के लिए 12000/– (र.क्र. 2021/759) शाखा सभा कोटा को 11000/– तथा शाखा सभा के निर्धन रोगी प्रकल्प को 2000/– सहयोगार्थ प्रदान किये। बधाई।

–0–

* दीपावली पर भगवान रामलला के मन्दिर में पधारने की खुशी में महासभा को उपहार स्वरूप श्री खगेश जी (आगरा) ने महासभा की गुल्लक योजना के अंतर्गत 5100/– प्रदान किये। आभार। (र.क्र. – 720)

–0–

* श्रीमती मौली चतुर्वेदी पत्नी श्री निशित चतुर्वेदी पुत्रवधू स्व. श्री मनमोहन – स्व. श्रीमती मधु चतुर्वेदी (बसुआगोविंदपुर/ हैदराबाद), पुत्री श्री गिरीश चंद्र – श्रीमती कविता चतुर्वेदी (हाथरस/भोपाल/बैंगलोर) ने अपनी पीएचडी प्रबंधन में पूर्ण कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। पीएचडी का विषय था A study on impact of the retail promotional strategies on the customers;A critical evaluation on the select mega stores at Hyderabad from Koneru Lakshmaiah University,Vijaywada (A.P.).। इस अवसर पर उनके पति श्री निशित चतुर्वेदी ने चंद्रिका सहायतार्थ 2100/– प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.– 730)

–0–

* श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री सुबोध चंद्र चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/भोपाल) ने अपने पति स्व. सुबोध चंद्र चतुर्वेदी की स्मृति में 5000 रुपये अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ व 101 रुपये महाविद्या देवी मंदिर सहायतार्थ प्रदान किए। (र.क्र.697)

शोक समाचार

* श्री अंचल चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री भोलानाथ चतुर्वेदी (देहरादून/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 12 नवंबर 2021 को 56 वर्ष की आयु में भोपाल में हो गया।
* श्री राकेश चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री सतीश चन्द्र चतुर्वेदी (फतेहपुर/शहादरा, दिल्ली) का स्वर्गवास दिनाँक 14 नवंबर 2021 को हो गया।
* श्री राजकुमार चतुर्वेदी (बटेश्वर/मेरठ/कोलकाता)का स्वर्गवास लगभग 85 वर्ष अवस्था मे दिनाँक 13 नवंबर 2021 को हो गया।
* श्रीमती अमृता चतुर्वेदी पत्नी स्व. पीयूष कान्त चतुर्वेदी (सिकंदरपुर/आगरा) का स्वर्गवास दिनांक 18/11/21 को आगरा में हो गया।
* कैप्टन शरद मिश्र सुपुत्र स्व. राधेश्याम मिश्र (इटावा/कानपुर) के स्वर्गवास दिनाँक 19/11/2021 को कानपुर में हो गया।
* श्री जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री जगमोहन लाल चतुर्वेदी (हिंडौन/अजमेर/जयपुर) का देहावसान 20.11.21 को अपने पुत्र संजय (कुक्कू) के पास जयपुर में हो गया।
* श्री अवधेश चतुर्वेदी,अरुण (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 21 नवंबर 2021 में अपनी छोटी पुत्री शानू के यहाँ नोएडा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ॐ गुरू जय गुरू

शत्-शत् नमन श्रद्धेय मम्मी

स्वः श्रीमती अम्रता चतुर्वेदी

जन्म तिथि :- 22.08.1942

निर्वाण तिथि :- 18.11.2021

पत्नी स्वः पीयूष कान्त चतुर्वेदी

पुत्र वधु स्वः विश्वेश्वर दयाल चतुर्वेदी

पुत्री स्वः विश्वनाथ रावत अनूपशहर

निवासीः- 41 पुरानी विजयनगर कॉलोनी, आगरा

शोकाकुलः- मर्माहत परिवार

आयुषकान्त चतुर्वेदी-
रूपम चतुर्वेदी
(पुत्र-पुत्र वधु)

शुभ्रा चतुर्वेदी गुणगाँव (पुत्री)

प्रत्यूष कान्त चतुर्वेदी (पौत्र)

अभिरम रिया (धेवता-धेवती)

-:प्रतिष्ठानः-

- कान्त एण्ड कम्पनी
- कान्त ऑटो
- चतुर्वेदी एण्ड सन्स
- पी. कान्त एजेंसीज

दूरभाषः- 9837038623
8755279810

(र.क्र. 2021/764)

पंचम पुण्य स्मरण

स्व. श्री श्रीनाथ चतुर्वेदी

एडवोकेट/पूर्व पार्षद नगर पालिका मैनपुरी उ.प्र.

(1939 - 2016)

पुत्र : स्व. श्री ओंकारनाथ (कानूनगो कक्का) - श्रीमती कुन्तीदेवी (नई चाची)
97, मिश्राना मोहल्ला, मैनपुरी, उ.प्र.।

सिद्धांतो पर अडिग रहकर जिन्होंने न छोड़ा कभी अपने आदर्शों और अपनों का साथ, ऐसे ही थे, हम सबके शक्तिपुंज, ओजस्वी वक्ता, कलम और वाणी के धनी परम श्रद्धेय श्री नाथ
(आपको न भूल पाएंगे, आपकी बातें, यादें और आपके साथ बिताए पल,
हर पल याद आएंगे, साथ ही आपकी मौजूदगी का हर पल अहसास कराएंगे)

भतीजे-भतीजबहू	नातिन व धेवतियां	अनुज - अनुजवधू	भतीजियां-भतीज दामाद
त्रिदेव - कीर्ति *नवेन्दु* *अनुव्रत - सुलभा*	अनिका शुचि, श्रीया, अद्विता, अक्षदा	त्रिलोकीनाथ-श्रीमती आशा चतुर्वेदी रेंज ऑफिस के पास, दतिया, म.प्र. फोन. नं. 09425766590 07974320313, 07999867085	निवेदिता-मनोज(कानपुर) नंदिता-अशोक(ग्वालियर) अणिमा-अंकुर (जयपुर)

श्रद्धावनत परिजन - श्री नरेशचंद्र चतुर्वेदी (कानपुर), मनोज, अखिल (मैनपुरी)-भ्रातागण
श्रीमती विपला (इलाहबाद) - भाभी
संतोषचंद्र, प्रवीण, दिलीप, अनुपम (लखनऊ), सुनीलचंद्र, संजय, अनीष (कानपुर), राजेश (कलकत्ता), साहिल (दिल्ली)-भतीजे
त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी एडवोकेट, रेंज के पास, दतिया मध्यप्रदेश

(र.क्र. 2021/761)

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

जन्म: 27.08.1947 **स्वर्गवास: 22.10.2021**

श्रीमती विभा पाण्डेय, चाईबासा

(पत्नी : स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र नाथ पाण्डेय)(रमेश)

-: शोकाकुल :-

जेठ : रविंद्र नाथ

देवर - देवरानी : रतीन्द्र नाथ - चित्रा
नरेंद्र नाथ - साधना

पुत्र - पुत्रवधू : नीरज - शालिनी
मोहित - संजू
रीतेश - अल्पा
जीतेश - अनामिका
अभिषेक, हर्षवर्धन (भतीजा)

नातिन – नाती : कृति, गुंजा, परी, शौर्य, प्रेहान

नंद - नंदोई : शीला,
गीता,
मीना - गोपाल

भतीजी : नम्रता, नंदिता

मायका पक्ष : अश्वनी - अरुणा
आलोक
भुवनेश - सविता
पीयूष - रेखा
एवं समस्त पुरा परिवार

श्रद्धानवत समस्त पाण्डेय परिवार

पता : सेंटोला, पोस्ट ऑफिस - चाईबासा, जिला - पश्चिम सिंहभूम- 833201 (झारखंड)

(र.क्र. 2021/758)

श्रीमान झाऊलाल ज्योतीप्रसाद जी चतुर्वेदी

पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है
पिता रक्त में दिये हुए संस्कारों की मूर्ति है
पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का अहसान है

श्रीमती भगवती झाऊलाल जी चतुर्वेदी

माँ कलम है, दवात है, स्याही है माँ
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है माँ
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है माँ
माँ फूंक से ठंडा किया हुआ कलेवा है माँ

विनम्र अभिवादन

J. L. CHATURVEDI COLLEGE OF ENGINEERING
NEW NANDANVAN NAGPUR
BHAGWATI COLLEGE OF ENGINEERING
HARPUR, NAGPUR
J. L. CHATURVEDI COLLEGE OF PHARMACY
(M. Pharm B. Pharm.)
J. L. CHATURVEDI COLLEGE OF PHARMACY
(D.Pharm.)
BHAGWATI GIRLS PRATHAMIK VIDYALAYA,
NEW NANDANVAN NAGPUR
BHAGWATI GIRLS HIGH SCHOOL ,
NEW NANDANVAN NAGPUR
BHAGWATI GIRLS JUNIOR COLLEGE
(ARTS, COMMERCE, SCIENCE,MCVC) ,
NEW NANDANVAN NAGPUR

महाविद्या, ३१०ए, सिव्हील लाईन्स, हिस्लॉप कॉलेज के पास, नागपूर ४४० ००१ फोन नं ०७१२ २५३९९४९, २५३९९५९

(र.क्र. 2021/746) 2/12